मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अक्टूबर - दिसम्बर 2021

RNI Reference No.: 1322876 Title Code : MPHIN34795 Year : 5 Edition 19

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का उद्घाटन

हत्यारी खो, इंदौर

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अक्टूबर - दिसम्बर 2021

Patron :

Ramesh Kumar Gupta

Principal Chief Conservator of Forests
and Head of Forest Force Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :

Atul Jain
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Chitranjan Tyagi
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Development/ JFM)

Atul Shrivastav
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(M.P. State Minor Forest Produce Trading &
Development Co-operative Federation)

Ramesh Shrivastav
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(CAMPA)

H.S. Negi
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

S.P. Sharma
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Green India Mission)

Capt. Anil Kumar Khare
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)

H.C. Gupta
Chief Conservator of Forests(Social Foresry, Bhopal)

Alwyn Burman
DCF(Research, Extension and Lok Vaniki)

B.K. Dhar
Prachar Adhikari(Samanvay)

Editor :

Dr. Sanjay Kumar Shukla
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lokvaniki) Bhopal

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram
Gaurav Rajput

Owner & Publisher :
Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam, Bhopal

Contact :
Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 0755-2524239

वनांचल संदेश

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1	राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल	1
2	अंतर्राष्ट्रीय वन मेला (22 से 26 दिसम्बर 2021)	9
3	आज़ादी का अमृत महोत्सव, वन विभाग, मध्यप्रदेश	14
4	रालामण्डल इन्दौर में वन्य प्राणी सप्ताह कार्यक्रम का शुभारम्भ	17
5	Anubhuti Program 2021-22	19
6	Plant Tissue Culture Lab, Social Forestry Circle, Indore (MP)	21
7	नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल/प्रकृति व्याख्या पथ	24
8	मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा संचालित प्रमुख गतिविधियां	27
9	थूना अनुसंधान केन्द्र	31
10	वन विभाग ने महिलाओं को जोड़ा स्वरोजगार से	34
11	वन संरक्षण एवं वन संवर्धन हेतु जंगल यात्रा संस्मरण	35
12	डायनासोर फासिल नेशनल पार्क- बाग : एक विस्तृत परिचय	38
13	Tigers for India- "A Rally on Wheels"	39
14	Janapav: Origin of Seven and Half Rivers	42
15	‘‘पवन क्षिप्रा, हरित क्षिप्रा, स्वच्छ क्षिप्रा’’ - क्षिप्रा नदी को प्रवाहमान बनाने हेतु योजना	43
16	हरे भरे पेड़ों से मुस्कुराई वीरान पहाड़ियां	44
17	Rukhad Bison Retreat	47
18	ग्राम वन समिति, अमडिहा वन परिक्षेत्र बहरी, वन मण्डल सीधी, वन वृत्त रीवा	48
19	निर्णयन: 3d नक्शों से वन प्रबंधन की मदद	49
20	Plastic Free Plantations Initiative, complemented with Wealth from Waste	50
21	रेखीय अवसंरचना एवं पर्यावास विखंडन	54
22	Self Sustaining Camping Eco-Tourism	58
23	Covid created Environment Volunteers - Save a Seed - Save a Tree Campaign - QR Coding of Trees	60
24	कविता: हर यहाँ उपमा मिलेगी	64
25	भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति	65
26	अखबारों के आईने में	66
27	वानिकी गतिविधियां कार्टूनिस्ट की नजर में	67

संदेश

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश पत्रिका, शासन की नीतियों के अनुरूप प्रदेश में संचालित विभिन्न वानिकी गतिविधियों के साथ ही कार्यों के आत्म विश्लेषण का मंच उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही वन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के सुझावों के माध्यम से वानिकी योजनाओं के क्रियान्वयन को बेहतर बनाने का अवसर प्राप्त होता है। विभाग के इस प्रकाशन ने विभाग के कार्यों को अभिलेखित करने के साथ ही वानिकी सेक्टर से जुड़े विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं के बीच बेहतर संवाद बनाने का अवसर प्रदान किया है।

पत्रिका के इस अंक में वन्य प्राणी सप्ताह के विशेष आयोजन को केन्द्र में रखते हुए वन्य प्राणी प्रबंधन की दिशा में किये गये कार्यों को स्थान दिया गया है। मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के प्रकाशन की यह श्रृंखला विभाग की विभिन्न गतिविधियों को एक मंच उलपब्ध करा पाई है जिसका सीधा लाभ वानिकी के विभिन्न आयामों में जुड़े व्यक्तियों तथा संस्थानों को हुआ है।

इस सराहनीय प्रयास के लिए पत्रिका के सम्पादक मंडल के सदस्य तथा स्टॉफ बधाई के पात्र हैं।

रमेश कुमार गुप्ता
भा.व.से.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक
एवं वन बल प्रमुख

संदेश

प्रदेश में वन विभाग द्वारा वनों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रभावी पहल हुई है, जिसका लाभ प्रदेशवासियों को मिल रहा है। वन संसाधनों से समृद्ध मध्यप्रदेश में वन, वन्यजीव एवं वनवासी एक-दूसरे के परिपूरक है। वानिकी विकास एवं विस्तार से वनवासी कल्याण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रदेश में जन-भागीदारी के द्वारा वानिकी गतिविधियों के क्रियान्वयन से वानिकी विकास एवं संवर्धन के बेहतर परिणाम मिले हैं, इस दिशा में विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों को वनांचल संदेश के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

भावी पीढ़ी को वन, जल, जीव तथा जंगल जैसे प्राकृतिक विषयों पर एक नूतन दिशा एवं उल्लास हेतु अभिनव प्रयोग ''अंतर्राष्ट्रीय वन मेला'' तथा ''वन्य प्राणी सप्ताह''के आयोजन का वर्णन इस अंक की अपनी विशेषता है। इन जनोन्मुखी प्रयासों को अभिलेखित करने तथा जनता से संवाद की दिशा में वनांचल संदेश की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस सराहनीय प्रयास के लिये सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों एवं पाठक गण के योगदान को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

अतुल कुमार जैन
भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

सम्पादकीय

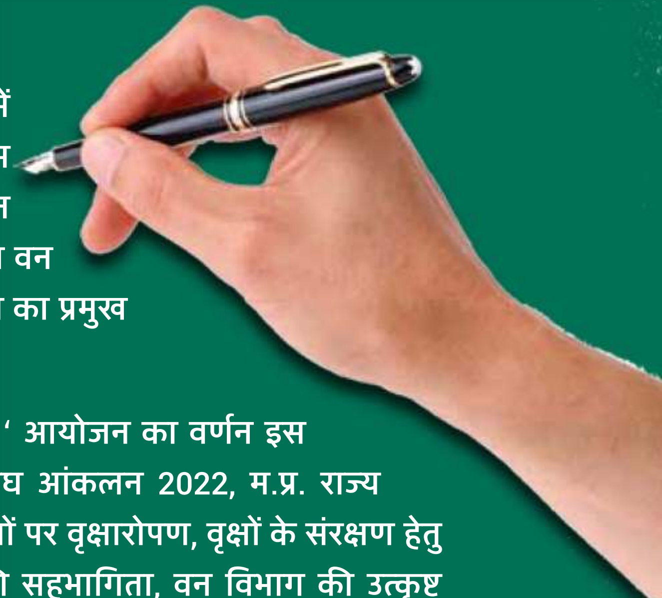

वनांचल संदेश के प्रस्तुत अंक में दी गई प्रस्तुतियाँ कई मायने में एक नूतन समावेश है। अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा किये गये प्रयास को विशेष संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। क्षेत्रीय, अनुसंधान एवं विस्तार, वन्यप्राणी तथा विभाग की अन्य शाखाओं में पदस्थ वन कर्मचारियों के द्वारा किये गये प्रयासों की प्रस्तुति वनांचल संदेश का प्रमुख उद्देश्य भी है।

विभाग द्वारा ''अंतर्राष्ट्रीय वन मेला'' तथा ''वन्य प्राणी सप्ताह'' आयोजन का वर्णन इस अंक की अपनी विशेषता है। प्रस्तुत अंक अखिल भारतीय बाघ आंकलन 2022, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा संचालित गतिविधियां, पथरीली पहाड़ियों पर वृक्षारोपण, वृक्षों के संरक्षण हेतु विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे अभियान तथा वन समितियों की सहभागिता, वन विभाग की उत्कृष्ट उपलब्धियों को दर्शाता है।

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश को वन कर्मियों की सकारात्मक भागीदारी से चलने वाला एक जीवंत संदेश वाहक बनाने का हमारा सतत् प्रयास है। क्षेत्रीय अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे शासन की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता को दिलाने में विभागीय सहयोग की जानकारियां साझा करें। आशा है कि सभी के सहयोग से वन विभाग कि उल्लेखनीय गतिविधियों को जनसाधारण तक पहुंचाने से वनों, वन्य प्रणियों और वनवासी समुदायों के कल्याण की राह आसान होगी।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. संजय कुमार शुक्ला
भा.व.से.

अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल

प्रतिवर्ष की भांति वन विहार राष्ट्रीय उद्यान - जू में राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह का आयोजन दिनांक 01.10.2021 से 07.10.2021 तक किया गया। इस दौरान वन, वन्य प्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये ताकि जन मानस में चेतना का संचार हो सके।

वन्य प्राणी सप्ताह के दौरान वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं खुले वर्ग हेतु चित्रकला, रंगोली, पाम पेंटिंग, मेंहदी, फोटोग्राफी, फेस पेंटिंग, फैंसी ड्रेस, जस्ट ए मिनट आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन समस्त प्रतियोगिताओं में लगभग 1450 प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही वन्य प्राणी सप्ताह के दौरान फेसबुक पर जस्ट ए मिनट प्रतियोगिता का प्रसारण किया गया एवं एनीमल कीपर तथा स्टाफ के साथ परिचर्चा का भी आयोजन किया गया।

शैक्षणिक गतिविधियों के अंतर्गत पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर, सृजनात्मक कार्यशाला, स्वच्छता अभियान, वन्य प्राणी फोटो प्रदर्शनी, गिद्धों की फोटो प्रदर्शनी, वन्य जीव संरक्षण एवं ईको पर्यटन पर क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय भोपाल की प्रदर्शनी तथा श्री डी.आर. मण्डल की भारत के डाक टिकटों में बाघ प्रदर्शनी आदि का भी आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त महिलाओं हेतु पृथक से पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर (गुलाबी शिविर) का आयोजन भी किया गया।

राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह के दौरान वन एवं वन्य प्राणी संरक्षण पर निम्नानुसार आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम निम्नानुसार रहे -

प्रथम दिन - वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 का शुभारंभ श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव, वन, म.प्र. शासन द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. अभय कुमार पाटिल, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) एवं मुख्य वन्य प्राणी अभिरक्षक, श्री सी.के. पाटिल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (संरक्षण), श्री पुष्कर सिंह, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघुवनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री राजेश कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना एवं वन भू अभिलेख), श्री जे.एस. चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), श्री असीम श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी), डॉ. अतुल श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य लघुवनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री सत्यानंद, मुख्य कार्यपालन अधिकारी म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, श्रीमती संगीता सक्सेना, संचालक विश्व प्रकृति निधि भारत, श्री रवीन्द्र सक्सेना, मुख्य वन संरक्षक भोपाल वृत्त भोपाल, श्री एच.सी. गुप्ता, संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, श्री आलोक पाठक, वन मंडलाधिकारी, वन मंडल भोपाल, श्री ए.के. जैन सहायक संचालक वन विहार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सेवा निवृत्त वन अधिकारी तथा बड़ी संख्या में शालाओं के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण तथा उनके अभिभावक एवं मीडियाकर्मी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री ए.के. खरे, सेवा निवृत, उप वन संरक्षक द्वारा किया गया। प्रथम दिवस दिनांक 01.10.2021 को वन विहार स्थित विहार वीथिका में चित्रकला प्रतियोगिता संपन्न हुई। इसमें कक्षा पांच से आठ हेतु **"एक पेड़ जो जीव जन्तुओं का घर है",** कक्षा नौ से बारह हेतु **"भारतीय इतिहास/ संस्कृति/ मिथकों में वन्य प्राणी"** खुला वर्ग में **"मध्यप्रदेश में चीता का पुनर्स्थापन"** तथा दिव्यांग छात्रों ने अपनी पसंद के विषय पर प्रतिभागियों ने चित्रकारी की। प्रतियोगिता में लगभग 40 शिक्षण संस्थाओं के लगभग 517 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम स्थल पर माननीय मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों ने पेंटिंग बनाकर वन्य प्राणी सप्ताह 2021 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव वन द्वारा भोपाल बर्ड्स के सहयोग से तैयार किया गया वन विहार का पक्षी विविधता ब्रोशर का विमोचन

किया गया। साथ ही वन्य प्राणी फोटो प्रतियोगिता प्रदर्शनी, वन्य जीव संरक्षण एवं ईको पर्यटन पर क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय भोपाल की प्रदर्शनी तथा श्री डी.आर. मण्डल की भारत के डाक टिकटों में बाघ प्रदर्शनी का भी उद्‌घाटन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। प्रचार वाहन (वन्य प्राणी सप्ताह) को भी हरी झण्डी दिखाकर मुख्य अतिथि द्वारा लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम स्थल पर सहयोगी संस्थाओं म.प्र. जैव विविधता बोर्ड, म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, सामाजिक वानिकी, म.प्र. बेम्बू मिशन, म.प्र. लघु वनोपज संघ आदि द्वारा स्टाल भी लगाये गये।

अपरान्ह 1.00 बजे से 2.30 बजे तक रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कनिष्ठ वर्ग कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों ने **"मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली तितलियाँ"** विषय पर तथा वरिष्ठ वर्ग द्वारा **"मध्यप्रदेश के कम चर्चित परन्तु महत्वपूर्ण वन्यजीव जैसे पेंगोलिन, सेही, जाइंट स्क्वीरल, घड़ियाल, केमेलियॉन, नीलकंठ, दूधराज, ग्रीन बी ईटर, माउस डीयर, सेंडबोआ आदि"** विषय पर कुल 135 प्रतिभागियों ने सुंदर रंगोली का प्रदर्शन किया। रंगोली के माध्यम से बच्चों को वन्य प्राणियों की ओर आकर्षित किया गया। इसका उद्देश्य बच्चों का पक्षियों-तितलियों आदि के प्रति लगाव उत्पन्न करना एवं संदेश प्रसारित करना था।

द्वितीय दिवस - दिनांक 02.10.2021 को वन्यप्राणी सप्ताह 2021 के उपलक्ष्य में पक्षी दर्शन व प्रकृति शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में यूथ हॉस्टल एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं के लगभग 102 प्रतिभागियों ने पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दर्शन किया जिसमें प्रमुख है पोंड हेरोन, इग्रेट, मेग पाई रॉबिन, किंगफिशर, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, गोल्डन ओरिओल, विहिस्लिंग टील्स, ब्रोंज विंग जकाना, कार्मोरेंट, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया आदि। तितलियों में कॉमन ग्रास यलो, ब्लू टाईगर, प्लेन टाईगर, ग्रे पेनसी, क्रीमसन रोज, कॉमन ईवनिंग ब्राउन आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। स्त्रोत व्यक्ति के रूप में श्री ए.के. खरे, डॉ. सुदेश वाघमारे, डॉ. संगीता राजगीर,

मो. खालिक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री ए.के. जैन द्वारा किया गया।

राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत ही वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में आज स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्वयंसेवी व्यक्तियों तथा वन विहार के लगभग 50 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लेकर वन विहार के मुख्य मार्ग के दोनों ओर गेट क्रमांक 2 से गेट क्रमांक 1 तक पॉलीथीन, डिस्पोजल आदि की सफाई कर पर्यावरण एवं वन्य प्राणी संरक्षण में अपना योगदान दिया। इस अवसर पर संचालक वन विहार श्री एच.सी. गुप्ता, सहायक संचालक श्री ए.के. जैन, वन्य प्राणी चिकित्सक डॉ. अतुल गुप्ता एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

तृतीय दिवस - राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के तहत दिनांक 03.10.2021 को प्रातः 6.30 बजे पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में यूथ क्लब सहित लगभग 130 पक्षी प्रेमियों ने पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दर्शन किया जिसमें प्रमुख हैं पोंड हेरोन, इग्रेट, मेग पाई राबिन, किंगफिशर, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, दूधराज, गोल्डन ओरिओल, रेड मुनिया, आईओरा, विहिस्लिंग टील्स, ब्रोंज विंग जकाना, कार्मोरेंट, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया आदि। तितलियों में कॉमन ग्रास यलो, ग्रे पेनसी, ब्लू टाईगर, प्लेन टाईगर, ग्रे पेनसी, क्रीमसन रोज, कॉमन ईवनिंग ब्राउन आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। स्रोत व्यक्ति के रूप में श्री ए.के. खरे, डॉ. सुदेश वाघमारे, डॉ. संगीता राजगीर एवं मो. खालिक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री ए.के. जैन द्वारा किया गया।

इसी दिवस प्रात: 07.00 बजे से कनिष्ठ वर्ग (कक्षा VI से VII) एवं वरिष्ठ वर्ग (खुला वर्ग) हेतु फोटोग्राफी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 126 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं साट कॉपी के रूप में अपने फोटोग्रास कार्यालय में जमा किये।

चतुर्थ दिवस - राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के तहत दिनांक 04.10.2021 को प्रात: 6.30 बजे पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 65 पक्षी प्रेमियों ने पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दर्शन किया जिसमें प्रमुख है गोल्डन ओरिओल, दूधराज, इग्रेट, मेग पाई राबिन, ब्रोंज विंग जकाना, किंगफिशर, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, पोंड हेरोन, रेड मुनिया, आईओरा, विहिस्लिंग टील्सकार्मोरेंट, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया आदि। तितलियों में ग्रे पेनसी, कॉमन ईवनिंग ब्राउन, प्लेन टाईगर, कॉमन ग्रास यलो, ब्लू टाईगर, क्रीमसन रोज आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। स्रोत व्यक्ति के रूप में डॉ. सुदेश वाघमारे, डॉ. संगीता राजगीर एवं मो. खालिक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री ए.के. जैन द्वारा किया गया।

अन्य कार्यक्रम के रूप में प्रात: 09.30 बजे विहार वीथिका में **"एनीमल कीपर एवं स्टाफ के साथ परिचर्चा"** आयोजित की गई, जिसमें 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परिचर्चा में एनीमल कीपर्स द्वारा प्रतिभागियों को भालू, बाघ, तेंदुआ, गौर, हायना एवं सर्पों की देखभाल कैसे की जाती है, उनके भोजन, उपचार आदि के सम्बंध में जानकारी दी गई, जिसे उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा काफी सराहा गया। इस अवसर पर सहायक संचालक वन विहार श्री ए.के. जैन, श्री सचिन परसाई, श्री शर्मानंद गैरे, श्री रूपकुमार मेहर एवं श्री मनोज विश्वकर्मा द्वारा भी पक्षियों, तितलियों, सर्प एवं वन्यप्राणियों के सम्बंध में प्रतिभागियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया एवं भ्रांतियों को दूर करते हुये उन्हें आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही केरवा स्थित गिद्ध प्रजनन एवं संरक्षण केन्द्र के

प्रभारी डॉ. रोहन श्रृंगारपुरे द्वारा मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली गिद्धों की प्रजातियों के संरक्षण, संवर्धन एवं गिद्धों की मानव जीवन में उपयोगिता के सम्बंध में प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान की गई।

साथ ही राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत अन्य प्रतियोगिताओं के रूप में प्रातः 11.00 बजे से **"वन्य प्राणी"** थीम पर खुला वर्ग हेतु **मेंहदी प्रतियोगिता** एवं दोपहर 12.00 बजे से **पाम पेंटिंग प्रतियोगिता** आयोजित की गई। जिसमें मेंहदी प्रतियोगिता में 169 प्रतिभागियों एवं पाम पेंटिंग में 85 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पंचम दिवस - राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत दिनांक 05.10.2021 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक छात्राओं/महिलाओं हेतु पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर (गुलाबी शिविर) का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में 58 पक्षी प्रेमी छात्राओं/महिलाओं ने भाग लिया। पक्षी प्रेमियों ने गोल्डन ओरिओल, दूधराज, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनीया, रॉबिन, कार्मेरिंट, लेसर विसलिगं टील, इग्रेट, रेड मुनिया, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, बुलबुल, जॅकाना, डब, हेरोन, रोलर, ग्रे हार्नबिल आदि पक्षियों का अवलोकन किया। तितलियों में कॉमन ग्रास यलो, ग्रे पेनसी, कॉमन प्लेन टाईगर, ब्लू टाईगर, ईवनिंग ब्राउन, क्रीमसन रोज आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। इस अवसर पर रिसोर्स पर्सन के रूप में डॉ. संगीता राजगीर, डॉ. गीतारानी गुप्ता अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री ए.के. जैन द्वारा किया गया।

ऑनलाइन आयोजित **"जस्ट ए मिनट"** प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रतिभागियों से प्राप्त जूनियर वर्ग की 15 एवं सीनियर

वर्ग की 16 प्रविष्टियों का मूल्यांकन निर्णायकों द्वारा किया गया। चयनित प्रविष्टियों को दिनांक 06.10.2021 को सायं 4.00 से 5.00 बजे तक फेसबुक पर प्रसारित किया गया।

षष्ठम दिवस - राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत दिनांक 06.10.2021 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रात: 11.00 बजे से स्कूली बच्चों हेतु सृजनात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के कुल 184 बच्चों ने भाग लिया। इन विद्यार्थियों को श्री विनय सप्रे, से. नि. शिक्षक जवाहरलाल नेहरू, बाल भवन भोपाल द्वारा रंगीन कागज के माध्यम से विभिन्न पक्षी, तितलियाँ एवं फूलों की आकृतियाँ बनाना सिखाया गया। इस अवसर पर श्री अरविन्द अनुपम, मूर्तिकार क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय के द्वारा क्ले मॉडलिगं में टाईगर बनाना सिखाया गया। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट के तहत विद्यार्थियों ने डस्टबिन, गमला एवं पॉट आदि बनाये गये। इस हेतु विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री जगदीश चन्द्रा, सेवा निवृत्त मुख्य वन संरक्षक एवं श्रीमती नेहा शर्मा उपस्थित रहीं।

साथ ही इसी दिवस **"जस्ट एक मिनट"** प्रतियोगिता की चयनित प्रविष्टियों का फेसबुक पर प्रसारण सायं 4.00 बजे से 5.00 बजे तक किया गया। समस्त प्रतियोगिताओं के परिणाम वन विहार की वेबसाइट/फेसबुक पर अपलोड किये गये एवं विजेताओं को वन विहार प्रबंधन द्वारा सूचित किया जाकर समापन समारोह में आमंत्रित किया गया।

सप्तम दिवस - दिनांक 07 अक्टूबर को राज्य स्तरीय वन्य प्राणी सप्ताह 2021 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू भोपाल का समापन कार्यक्रम श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मुख्य के आतिथ्य में आयोजित किया गया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को वन्यप्राणी संरक्षण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ. अभय कुमार पाटिल, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) एवं मुख्य वन्य प्राणी अभिरक्षक, श्री सी.के. पाटिल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (संरक्षण), श्री राजेश कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना एवं वन भू अभिलेख), श्री जे.एस. चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), श्री असीम श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी), डॉ. अतुल श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य लघुवनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री एच.एस. नेगी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी), श्री सत्यानंद, मुख्य कार्यपालन अधिकारी म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, श्रीमती पदमाप्रिया बालाकृष्णन, सचिव, वन, म.प्र. शासन श्रीमती संगीता सक्सेना, संचालक विश्व प्रकृति निधि भारत, श्री रवीन्द्र सक्सेना, मुख्य वन संरक्षक भोपाल वृत्त भोपाल, श्री एच.सी. गुप्ता, संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, श्री आलोक पाठक, वन मंडलाधिकारी, वन मंडल भोपाल, श्री ए.के. जैन सहायक संचालक वन विहार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सेवा निवृत्त वन अधिकारी के साथ-साथ बड़ी संख्या में शालाओं के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण तथा उनके अभिभावक एवं इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडियाकर्मी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री ए.के. खरे, सेवानिवृत्त, उप वन संरक्षक द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू एवं संजय टाईगर रिजर्व के वृत्त चित्र का प्रसारण कान्हा, सामाजिक वानिकी तथा बांधवगढ़ टाईगर रिजर्व की कॉफी टेबल बुक का विमोचन एवं वेबसाइट को लॉंच भी किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा 67 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। साथ ही विभिन्न वर्गों में वन्यप्राणी संरक्षण हेतु किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिये कुल 17 अधिकारियों/कर्मचारियों को वन्यप्राणी संरक्षण पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये तथा वन विहार नेचर ट्रेल एवं सर्प व्याख्या गैलरी का भी शुभारंभ किया गया।

वन विहार की मूवी (फिल्म) का प्रीमियर भी इसी दिवस दिनांक 07.10.2021 को सायं 07.00 बजे फेसबुक लिंक https://www.facebook.com/108287514304679/posts/372893161177445/ एवं यू ट्यूब पर लिंक https://youtu.be/q4v1rXmXt98 के माध्यम से किया गया।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत दिनांक 07 अक्टूबर 2021 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रात: 10.00 बजे विद्यालयीन छात्र/छात्राओं हेतु वन्यप्राणियों पर आधारित फैंसी ड्रेस एवं फेस पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के 98 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) एवं मुख्य वन्य प्राणी अभिरक्षक श्री आलोक कुमार द्वारा 01 से 07 अक्टूबर तक

आयोजित राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2021 के अंतर्गत हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं शैक्षणिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के अंत में संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान श्री एच.सी. गुप्ता द्वारा मुख्य अतिथि महोदय एवं सभी सम्माननीय अतिथियों, पुरस्कार विजेताओं, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, अभिभावकों एवं सहयोगी अधिकारियों/कर्मचारियों, संस्थाओं-बांस मिशन, म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, बायोडायवर्सिटी बोर्ड, सामाजिक वानिकी, मुख्य वन संरक्षक भोपाल, टेंट-साउंड व्यवस्थाओं आदि का आभार व्यक्त किया गया।

संचालक
वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एवं ज़ू, भोपाल

अंतर्राष्ट्रीय वन मेला
(22 से 26 दिसम्बर 2021)

"लघु वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा"

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग एवं मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ, मर्यादित के संयुक्त तत्वावधान में 8वें अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का आयोजन 22 से 26 दिसम्बर 2021 की अवधि में किया गया। अंतर्राष्ट्रीय वन मेले के उद्घाटन समारोह का आयोजन दिनांक 22 दिसम्बर को श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश के मुख्य आतिथ्य, डॉ. कुँवर विजय शाह, माननीय वन मंत्री, मध्यप्रदेश शासन की अध्यक्षता में तथा, श्री विश्वास सारंग, माननीय मंत्री, चिकित्सा शिक्षा, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास विभाग, मध्यप्रदेश शासन एवं श्री राम किशोर कांवरे, माननीय राज्य मंत्री, आयुष (स्वतंत्र प्रभार) जल संसाधन, मध्यप्रदेश शासन के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा धनवंतरी पूजन

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी का सम्बोधन

माननीय वन मंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह जी द्वारा वन मेले में विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन

इस अवसर पर श्री अशोक बर्णवाल, प्रशासक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ एवं डॉ. रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, वन विभाग, मध्यप्रदेश, श्री पुष्कर सिंह, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ एवं अन्य अधिकारी गण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लोग, गणमान्य नागरिक एवं जन समुदाय उपस्थित रहा । इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला-2021 की थीम "लघु वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा'' रखी गई थी। मेले के माध्यम से मध्यप्रदेश की अत्यंत समृद्ध जैव विविधता की झलक मिलती है साथ ही वनोपज संग्राहकों के जीवन में हो रहे गुणवत्तापूर्ण सुधार, वनोपज आधारित प्रसंस्करण तकनीक, अनुसंधान एवं व्यावसायिक आयाम की जानकारी भी आम जनों को प्राप्त होती है।

यह मेला प्रकृति के प्रति आदर भाव जाग्रत करने की भी एक महत्वपूर्ण सार्थक पहल है। मेले में प्रदेश के वनवासियों एवं लघु वनोपज संग्राहकों की आजीविका में हुई गुणात्मक वृद्धि के लिये राज्य शासन की जन कल्याणकारी योजनाओं का अभिनव प्रयास भी देखने को मिला।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा विन्ध्य हर्बल्स उत्पादों के उपयोग का आव्हान

माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह जी जी द्वारा सम्बोधन

क्रेता-विक्रेता सम्मेलन

वनों पर आश्रित वनवासियों की आजीविका एवं जड़ी-बूटियों के संरक्षण के प्रयासों की लोकप्रियता के कारण यह मेला अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पहचान बन चुका है। मध्यप्रदेश के वनों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध लघु वनोपज जड़ी-बूटियां न केवल औषधीय उपचार में सहायक हैं अपितु वनवासियों एवं ग्रामीणों की आर्थिक उन्नति का प्रमुख साधन भी है।

इन जड़ी-बूटियों का संग्रहण, मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण की विभिन्न विधियां अपनाकर ग्रामीणों की आय में उत्तरोत्तर वृद्धि का एक सशक्त माध्यम है। अंतर्राष्ट्रीय मेले के आयोजन से स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक चेतना के विस्तार के साथ-साथ परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति जनमानस की जागरुकता और प्रबल हुई है।

इस प्रकार के आयोजन से लघु वनोपज आधारित आजीविकाओं को प्रोत्साहन एवं इनसे जुड़े अंश धारकों को एक विपणन मंच उपलब्ध तो होता ही है, बल्कि लघु वनोपजों के मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण तकनीक के जीवंत प्रदर्शन से आम-जन भी लाभांवित होते हैं।

पिछले दशकों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदिक पद्धति से उपचार, जैविक एवं हर्बल उत्पादों के उपयोग में वृद्धि होने से ऐसे उत्पादों की मांग में भी वृद्धि हो रही है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लघु वनोपजों का संग्रहण वनवासी समुदाय की आजीविका का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। जन-समुदाय में इनके प्रति जागरूकता बढ़ाने का कार्य वन मेले के माध्यम से किया जाता है। मेला आयोजन के दौरान आयोजित क्रेता-विक्रेता सम्मेलन से लघु वनोपज संग्राहकों, व्यापारियों, औषधि प्रसंस्करणकर्ता एवं निर्माताओं के लिए मंच उपलब्ध कराना लघु वनोपज के विकास एवं विपणन की संभावनाओं का प्रयास साझेदारों एवं आम-जनों के लिए लाभदायक रहा।

लघु वनोपजों के प्रबंधन क्षेत्र में देश-विदेश में हो रहे अनुसंधान एवं उनके परिणामों से अवगत होने के लिये दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भी इस दौरान किया गया।

लघु वनोपज आधारित आजीविका क्षेत्र के विस्तार एवं संभावनाओं को तलाशकर लाभार्थी अंशधारकों को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य इस आयोजन के दौरान प्रमुखता से किया गया। मेले के दौरान कार्यशाला/संगोष्ठी, निःशुल्क, चिकित्सीय परामर्श एवं विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लघु वनोपजों से संबंधित क्रिया-कलापों एवं गतिविधियों के क्षेत्र में कार्यरत विषय विशेषज्ञों को बौद्धिक मंच उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित किया गया।

वन मेले के माध्यम से वन वासियों को एक ओर जहां उनके द्वारा संग्रहित कच्चे माल तथा वनौषधियों हेतु बाजार उपलब्ध हुआ वहीं उनमें ग्रामीण स्तर पर स्वावलम्बी होकर अपने उद्यम स्थापित करने की भी संभावनायें तलाशी गईं। साथ ही शहरी क्षेत्रों के निवासियों को उचित कीमत पर शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराए गए। लघु वनोपज संघ के इन प्रयासों से प्रदेश की अनेकों प्राथमिक संस्थाओं द्वारा तैयार वनौषधियां एवं अन्य हर्बल उत्पाद, प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर अपनी पहचान बना सकने में सफल हुए।

मेले के प्रमुख आकर्षण :

- मेला आयोजन के दौरान मेले में लगभग सवा लाख लोगों ने मेले का भ्रमण किया। प्रतिदिन लगभग 20000 लोगों ने मेले का लाभ उठाया।
- इस वर्ष मेले में 300 स्टॉल स्थापित किये गये, जिसमें मध्यप्रदेश के अलावा उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, दिल्ली, उड़ीसा, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, राजस्थान एवं जम्मू कश्मीर इत्यादि राज्यों का प्रतिनिधित्व रहा।
- मेले में नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श हेतु ओपीडी के 21 स्टॉल स्थापित किये गये, जिसमें 375 आयुर्वेदिक चिकित्सकों/वैद्यों द्वारा लगभग 6205 लोगों को नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श प्रदान किया गया।
- मेले में वनोपज उत्पादों की कुल बिक्री लगभग 1.55 करोड़ रुपये रही।
- इस वर्ष आमजनों में सर्वाधिक जोर रोग प्रतिरोधकता (Immunity) बढ़ाने एवं सुदृढ़ करने वाले उत्पादों पर अधिक रहा।

माननीय वन मंत्री जी द्वारा पुरष्कार वितरण

वन मेला मुख्य प्रवेश द्वार

माननीय वन मंत्री जी द्वारा क्रेता-विक्रेता सम्मलेन में सम्बोधन

विगत वर्षों में कोरोना महामारी का सामना करने में आयुर्वेद की भूमिका को विशिष्ट महत्व प्राप्त हुआ है, जिसे देखते हुए इस वर्ष मेले की थीम "Minor Forest Produce For Health Security" ''लघु वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा'' रखी गई। इस थीम पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 24-25 दिसम्बर 2021 की अवधि में किया गया। इस कार्यशाला में भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, फिलीपिन, थाईलैण्ड के विषय विशेषज्ञों के

साथ-साथ मध्यप्रदेश एवं अन्य राज्यों के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे तथा लघु वनोपजों के प्रबंधन एवं संरक्षण के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। लघु वनोपज के विदोहन के लिये संग्रहणकर्ता, पारम्परिक पद्धति से उपचारकर्ता एवं वैद्यों, विशेषज्ञों के साथ एक सार्थक संवाद भी स्थापित किया गया। कार्यशाला में बहुत सी सार्थक अनुशंसायें भी प्राप्त हुईं।

दो दिवसीय कार्यशाला के समापन में वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा पर "भोपाल घोषणा पत्र" जारी किया गया। घोषणा का प्रारूप श्री व्ही.आर. खरें, सेवा निवृत्त प्रधान मुख्य वन सरंक्षक एवं श्री पुष्कर सिंह, प्रबंध संचालक म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ के द्वारा रखा गया। इसके तहत वनोपजों की मूल्य का अधिक से अधिक लाभ हितग्राहियों को मिल सके इस हेतु इसे प्रधानमंत्री वन धन योजना एवं देवारण्य से जोड़ने तथा स्थानीय स्थल पर संग्राहकों को प्रसंस्करण करने हेतु उपकरण क्रय हेतु सहायता सुनिश्चित करने बाबत अनुशंसा की गई।

कार्यशाला में भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण के महानिदेशक एवं विशेष सचिव, श्री सुभाष चन्द्रा की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यशाला में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तकनीकी का भी सार्थक उपयोग किया गया।

क्रेता-विक्रेता सम्मेलन

पद्मश्री गजल गायक श्री अनूप जलोटा द्वारा सरस्वती पूजन

मेले के दौरान लघु वनोपज के आपसी क्रय-विक्रय हेतु क्रेता-विक्रेता सम्मेलन का आयोजन दिनांक 23/12/2021 को किया गया। जिसमें लघु वनोपज क्षेत्र के 113 व्यापारियों/उत्पादकों/संग्राहकों को संवाद का एक व्यापार मंच उपलब्ध कराया गया। क्रेता-विक्रेता सम्मेलन में 87 लघु वनोपज प्रजातियों की वन-औषधियों के लगभग 14 करोड़ रुपये के अनुबंध हस्ताक्षरित किये गये। जो कि अभी तक के विगत वर्षों में आयोजित क्रेता-विक्रेता सम्मेलन के अधिकतम अनुबंध हैं, जो कि एक रिकॉर्ड है। क्योंकि अभी तक विगत मेलों में अधिकतम 5.50 करोड़ रुपए के ही अनुबंध हुये थे। यह उपलब्धि स्वास्थ्य के रख-रखाव में वनोपज उत्पादों के बढ़ते योगदान को दर्शाता है तथा इस वर्ष मेले की थीम लघु वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा की प्रासंगिकता की पुष्टि भी करता है।

मेले में प्रत्येक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्कूल के बच्चों के लिये विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। स्कूल के बच्चों ने नृत्य, चित्रकला, गायन, फैंसी ड्रेस, नुक्कड़ नाटक, नुक्कड़ डांस इत्यादि में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पद्मश्री से सम्मानित सुप्रसिद्ध पार्श्व गायिका श्रीमती अनुराधा पौडवाल, पद्मश्री सम्मानित सुप्रसिद्ध गजल गायक श्री अनूप जलोटा, सूफी गायक कलाकार श्री जसप्रीत जाजीम शर्मा की प्रस्तुती एवं

प्रतिदिन ऑर्केस्ट्रा कार्यक्रम आकर्षण के केन्द्र रहे। झाबुआ एवं डिण्डोरी जिले के आदिवासी लोक नृत्य एवं लोक गीत का भी आयोजन इस दौरान किया गया।

मेला आयोजन के दौरान लोगों ने अनुशासित होकर कोविड गाइडलाइन का पालन करते हुए मेले का आनंद लिया। मेला स्थल के प्रवेश द्वार पर सैनेटाइजर, थर्मल स्क्रीनिंग एवं मास्क वितरण की निःशुल्क व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई। इसके अलावा प्रचार प्रसार में भी कोविड गाइडलाइन के अनुपालन के बारे में जन जाग्रति लाने का प्रयास किया गया।

दिनांक 26 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला 2021 के समापन समारोह का आयोजन मुख्य अतिथि श्री मंगुभाई पटेल, माननीय राज्यपाल, मध्यप्रदेश एवं डॉ. कुँवर विजय शाह, वन मंत्री, म.प्र. शासन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री अशोक बर्णवाल, प्रशासक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ एवं प्रमुख सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग, श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश एवं श्री पुष्कर सिंह, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल जी द्वारा स्मारिका विमोचन

समापन समारोह में माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल जी का सम्बोधन

अपना सच्चा धर्म निभाएं,
पेड़ बचाकर कर्तव्य निभाएं।

आज़ादी का अमृत महोत्सव
वन विभाग, मध्यप्रदेश

देश की आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर की स्मृति को चिरस्थायी बनाने तथा आम लोगों को इसकी भावना से अवगत कराने के लिए राज्य के विभिन्न स्थानों पर आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा बड़ी संख्या में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसी श्रृंखला में, वन विभाग के लिए निर्धारित विशेष सप्ताह में आयोजित किए गए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

1. नर्मदा नदी के उद्‌गम स्थल क्षेत्र का संरक्षण :-

नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थल अमरकंटक मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित है। अमरकंटक सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के मैकल पर्वत पर स्थित है। अमरकंटक से प्रारंभ होकर नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहते हुए गुजरात के भरूच में अरब सागर में मिल जाती है। नदी की कुल लंबाई 1312 किलोमीटर में से 1112 किलोमीटर मध्यप्रदेश के अंदर है। नदी के कुल 85,858 वर्ग किलोमीटर जलागम क्षेत्र में से 87%, मध्यप्रदेश में स्थित है।

पवित्र नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थल होने के कारण अमरकंटक लोगों की आस्था का केंद्र है। अमरकंटक क्षेत्र का विशिष्ट भू-दृश्य नर्मदा नदी को सदानीरा बनाता है। आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत उद्‌गम स्थल और उसके आसपास स्थित जल स्त्रोतों को सदानीरा बनाए रखने के लिए नर्मदा नदी के पारिस्थितिकीय तंत्र को संरक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उपस्थितजनों को नदी संरक्षण का संकल्प।

दिनांक 09-10-2021 को माननीय श्री अश्विनी कुमार चौबे, मंत्री (राज्य) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार द्वारा अमरकंटक में नर्मदा नदी के पारिस्थितिकीय तंत्र के संरक्षण हेतु एक कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के तहत नर्मदा नदी को सदानीरा बनाए रखने के लिए उद्गम स्थल क्षेत्र में स्थित 14,992 हेक्टेयर वन क्षेत्र में उपचार किया जाएगा। म.प्र. वन विभाग की इस पहल की सराहना करते हुए उन्होंने क्षेत्र के समस्त नागरिकों, वन समितियों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं इत्यादि के सहयोग से इस कार्य को पूर्ण किये जाने का आह्वान किया तथा आमजन को प्रकृति की रक्षा करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण क्षेत्र को वनों एवं जड़ी-बूटियों से आच्छादित कर नर्मदा नदी के प्रवाह को अविरल बनाया जा सकेगा, यही जीवनदायिनी माँ नर्मदा की सच्ची सेवा होगी।

माननीय मंत्री जी द्वारा अमृत महोत्सव आयुष वन का शिलान्यास

इस अवसर पर माननीय मंत्री जी द्वारा उद्गम स्थल क्षेत्र में औषधीय उपयोग में आने वाली स्थानीय प्रजातियों के संरक्षण हेतु अमरकंटक में "अमृत महोत्सव आयुष वन" की स्थापना हेतु शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम में वन महानिदेशक, भारत सरकार, श्री सुभाष चन्द्र (भा.व.से.) तथा प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख म.प्र. श्री रमेश कुमार गुप्ता (भा.व.से.) एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास) श्री चितरंजन त्यागी (भा.व.से.) उपस्थित रहे। वन महानिदेशक, भारत सरकार द्वारा इस अवसर पर नर्मदा नदी के उद्गम स्थल अमरकंटक के सम्पूर्ण पारिस्थितिकीय क्षेत्र को उपचारित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये म.प्र. शासन वन विभाग की पहल की सराहना करते हुए समस्त आवश्यक सहयोग देने का आश्वासन दिया।

माननीय मंत्री जी द्वारा पौधे का रोपण।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख मध्यप्रदेश द्वारा जनभागीदारी से वनों के संरक्षण को सफल बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी। इस अवसर पर उन्होंने आगे कहा कि बिना स्थानीय जनसमुदाय के सहयोग के आयुष वन के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होगी। उन्होंने यह भी कहा कि जड़ी-बूटियों द्वारा क्षेत्र को आच्छादित करने से रोजगार के नये अवसर सृजित होंगे तथा पारिस्थितिकीय तंत्र को बचाया जा सकेगा। इस अवसर पर लगभग 1500 स्थानीय नागरिक, जनप्रतिनिधि, स्वयं सेवी संस्था, ट्रस्ट एवं आश्रम एवं वन समितियों के सदस्य उपस्थित थे।

अमरकंटक क्षेत्र की वन समितियों से परिचर्चा करते हुए श्री रमेश कुमार गुप्ता प्रधान मुख्य वन संरक्षक मध्यप्रदेश एवं वन महानिदेशक भारत सरकार श्री सुभाष चंद्र।

श्री सुभाष चंद्र, वन महानिदेशक, भारत सरकार एवं श्री रमेश कुमार गुप्ता प्रधान मुख्य वन संरक्षक
मध्यप्रदेश द्वारा अमरकंटक में औषधीय पौधों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं संग्राहकों से चर्चा की।

माननीय श्री अश्विनी कुमार चौबे, मंत्री(राज्य) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार एवं माननीय श्री तुलसीराम सिलावट,
मंत्री, जल संसाधन विभाग, मध्यप्रदेश द्वारा रालामंडल, इंदौर एवं सरदारपुर, धार में पक्षियों के सर्वेक्षण की पुस्तिका का विमोचन।

रालामण्डल इन्दौर में वन्य प्राणी सप्ताह कार्यक्रम का शुभारम्भ

माननीय मंत्री (राज्य) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रालामण्डल इन्दौर में वन्य प्राणी सप्ताह कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

इस अवसर पर माननीय वनमंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह द्वारा माननीय मंत्री (राज्य) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार, का स्वागत किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री जल संसाधन विकास के द्वारा उमरीख़ेडा वनक्षेत्र में ईको पर्यटन का विकास हेतु माननीय मंत्री पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार, श्री अश्विनी कुमार चौबे जी के समक्ष रु. 25 करोड़ आवंटन हेतु प्रस्ताव रखा गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के तहत रालामण्डल परिसर में किया गया त्रिवेणी वृक्षारोपण

इस अवसर पर माननीय मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, भारत सरकार, माननीय मंत्री जल संसाधन विकास, मध्यप्रदेश शासन, माननीय विधायक इंदौर-3 के द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के तहत रालामण्डल परिसर में त्रिवेण वृक्षा रोपण किया गया।

त्रिवेणी तीन पेड़ों का संगम है- बड़, नीम और पीपल। त्रिवेणी हमें संस्कृति एवं आध्यात्मिकता से जुड़ने का संदेश देती है। त्रिवेणी आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान है, जहां त्रिवेणी लगी होती है वहां हर पल सकारात्मक उर्जा का प्रवाह बहता है।

शहीद वन कर्मचारियों के परिवार का सम्मान- दिवंगत वन कर्मचारियों के परिवार के सदस्य को वन्य प्राणी सप्ताह में माननीय मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, भारत सरकार, माननीय मंत्री जल संसाधन विकास, म.प्र. शासन, माननीय विधायक इंदौर-3 के द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

भारतीय वन्य जीव ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित सम्मान इस कार्यक्रम में स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र लोबनिया, वनपाल, स्वर्गीय श्री प्रवीण सिंह, वनपाल और स्वर्गीय श्री प्रवीण सिंह, वनपाल स्वर्गीय श्री दिलीप कनेल, वन रक्षक, के परिवारों को टोकन ऑफ मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया।

रालामण्डल स्थित शिकारगाह का संग्रहालय के रूप में रूपांतरण - माननीय मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, भारत सरकार द्वारा इन्दौर के रालामण्डल में होलकर शाही परिवार के ऐतिहासिक शिकारगााह का वन्यजीव संग्रहालय के रूप में उद्याटन किया। 234.50 हे. में फैला रालामण्डल वन्यजीवों की प्रचुरता के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है। इसी वजह से यह स्थान होलकर शाही परिवार के शिकारगाह के रूप में प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना 1989 में अभ्यारण्य के रूप में कि गई, जो 234.50 हे. में फैला है। यह अभ्यारण्य काला हिरण, चीतल, तेंदुआ, नीलगाय, बर्किंग डियर, मयूर, पाम-सिवेट और सेही के लिए प्रसिद्ध है।

Anubhuti Program 2021-22

Madhya Pradesh, the heart of incredible India, encompasses beauties and attractions of varied types, i.e. natural, cultural, historical, archaeological, geological etc. Natural resources of Madhya Pradesh have ample diversity and richness. Conservation and enrichment of these natural resources has become prominent need of the present times. For achieving this goal, sensitizing people through creating awareness among children is one of the best ways, because children are the future of the nation. If children are convinced and sensitized, they can bring a change in the society for conservation of natural wealth. Keeping this in mind, Madhya Pradesh Ecotourism Development Board has been conducting the Anubhuti Program since 2016 for school going children for protection and conservation of forests, wildlife and environment.

In this flagship program, MPEDB organizes one day nature education camps (Anubhuti) for school children of classes 6th to 12th standards. In these nature education camps, students get practical exposure to what they learn in the classes about natural resources, about inter-relationships between various components of ecosystems, about various natural processes and their importance in

our lives. These camps are organized under the guidance of forest staff and some volunteers from society who are trained before organizing these camps.

In these day long nature education camps, various nature-based activities like nature interpretation, bird watching, nature-based games & quiz competition etc. are conducted. Two nature education camps are organized in each forest range, so that students of remote areas may also get an equal opportunity to take part in the program.

Earlier this program used to be organized only for the government school students. This year, Nature Education Camps for private school students and other social groups are also being organized.

The details of Anubhuti Nature Education Camps organized in previous years are given below -

Year	No. of Camps	No. of Govt. Schools	No. of Students
2016-17	393	1938	53,935
2017-18	903	2735	1,11,068
2018-19	477	1744	61,181
2019-20	947	2582	1,18,491
Total	**2720**	**8999**	**3,44,675**

This year 2021-22, 950 Anubhuti Nature Education Camps are planned to be organized in 475 territorial and wildlife ranges, where participation of 1,20,000 students of government schools is estimated. Out of which till 31st December 2021, 155 camps have been organized and approximately 18,600 government school students have participated. Anubhuti Nature Education Camps' cost for government school students is sponsored by M.P. Forest Department which includes transportation, day visits, study materials etc.

Nature Education Camps for private schools are to be organized on payment basis, i.e. Rs. 120/- per student. Private school students can download the study material in the form of e-book by scanning the QR code or they can avail the hard-copy of Anubhuti Booklet by paying Rs. 30/- per book. Participation of 2,00,000 students studying in private schools is estimated for the Anubhuti Nature Education Camps 2021-22.

A mobile app (Anubhuti App) is being launched, so that the private schools and social groups can easily apply for Anubhuti Nature Education Camps after paying the fee for the nature guide and facilities i.e. Rs. 150/- per person. Details will be made available through the Anubhuti App.

Plant Tissue Culture Lab, Social Forestry Circle, Indore (MP)

Jayshri Sukhwani, JRF and Sandeep Gautam, ACF

Plant Tissue Culture

Plant tissue culture is a technique by which different type of plant can be cloned by artificial and under sterile condition. With this technique we can also propagate rare and endangered species of plants.

Commercially benefits

We can prepare multiple healthy and elite, commercially demanding plants by this technique. In India many PTC companies prepare banana, bamboo, other fruit, ornamental and medicinal plants depending on the market demand.

Our Lab History

Plant tissue culture technology was appreciated by the M.P. Forest Department and the lab was established in the year 2011.

Campus, Facilities and Equipments

This lab is spread in a 2,064 sq.ft. campus and has been divided in 3 functional parts :-

- 1st part is used in media preparation, washing and other work.
- 2nd part is developed as culture room, where plant culture are incubated [25C^0 +-] and 3000 lux light intensity is provided on culture.
- And, 3rd part is being used as a laminar air flow room where the team works on subculture and induction of plant on aseptic condition at laminar air flow machines.

Equipments

The lab has following equipents:

4 Air conditioner, 2 Autoclave machine, 1Orbital shaker, Ph meter machine, Refrigerator, RO machine, Water softener ,Weighting machine, 3 laminar air flow machines, DSLR camera, computer system

etc. Other than these, glassware and important chemicals are also availablein the lab.

Staff

One technical person as Plant tissue culture specialist (JRF), two trained workers, one labour and one forest guard .

Achievements and researches from 2011-2021

Since establishment of this lab the research to develop protocol for clonal multiplication by tissue culture of following plant species was done-

- Dahiman (Cordia macleodii),
- Garud (Redermachera xylocarpa),
- Achar (Buchanania lanzan),
- Anjan (Hardwickiabinata)
- Katanga bamboo (Bambusa bambos),
- Bheema bamboo (Bambusa balcooa),
- Bambusa vulgaris,Teak (Tectona grandis),
- Bambusa asper

In the lab multiples of about 2,500 plants of Katanga bamboo (Bambusa bambos), Bambusa asper, Bambusa balcooa are produced every month presently. Research work to develop protocol for Tectona grandis and Litsea glutinosa is in progress.

Sale of plants in the last 3 years					
Year	No.of soled plant/amount			Total amount	
	B.balcooa(no.)	Rs.	B.bambos(no.)	Rs.	
2019	1,740	52,200	6,525	1,95,750	2,47,950
2020	2,907	87,210	128	3840	91,050
2021	3,009	90,270	8,183	2,45,490	3,35,760
Total	**7,656**	**Rs. 2,29,680**	**14,836**	**Rs.4,45,080**	**6,74,760**

Media preparation room

Culture room

Laminar air flow room

Washing area

Tissue culture plants in

नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल/प्रकृति व्याख्या पथ

म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा अनुभूति कार्यक्रम के विद्यार्थियों एवं प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के लिये प्रकृति की व्याख्या हेतु प्रदेश के वन क्षेत्रों में स्थित ईको पर्यटन स्थलों पर नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल अथवा प्रकृति व्याख्या पथ, स्थापित कराये जा रहे हैं, जिससे पर्यटकों में प्रकृति एवं प्राकृतिक प्रक्रियाओं की समझ विकसित हो सके और वे प्रकृति संरक्षण के संदेश वाहक बन सकें।

नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल/प्रकृति व्याख्या पथ के तीन मुख्य घटक हैं :-

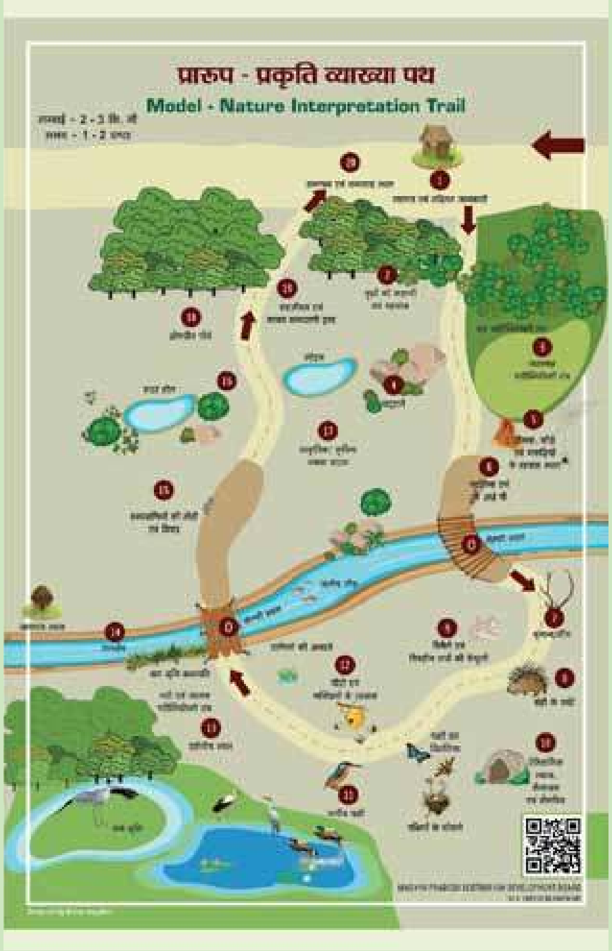

1. प्राकृतिक स्थलों के पारिस्थितिकीय तंत्र एवं वहाँ उपलब्ध ऐतिहासिक/सांस्कृतिक विरासत को प्रत्यक्ष देखना तथा उनका अनुभव करना।
2. इन स्थलों पर भ्रमण कर पर्यावरण के विभिन्न घटकों जिसमें, जन्तु एवं पेड़-पौधे, मिट्टी, जल, चट्टान आदि के परस्पर संबंध एवं उनके बीच परस्पर क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं को समझना।
3. नेचर ट्रेल पर मौजूद प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के संबंध में जानकारी प्राप्त करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दृश्य/श्रृव्य साधनों का उपयोग किया जा रहा है। नेचर ट्रेल पर पत्थर, अथवा Sunboard के Signages लगाये जा रहे हैं जिससे पर्यटकों को आवश्यक जानकारी प्राप्त हो रही है।

पर्यटकों को नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल पर भ्रमण कराने में एक गाईड/इन्टरप्रेटर की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। यह गाईड ही पर्यटक एवं प्रकृति के मध्य की कड़ी एवं सम्पर्क सूत्र है जिसको सदैव एक व्याख्याकार, एक शिक्षक, एक कलाकार, एक प्रकृति प्रेमी एवं एक अनुसंधानकर्ता की भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। नेचर इन्टरप्रेटर, अपनी कला द्वारा प्रकृति भ्रमणकर्त्ता को प्रकृति के विभिन्न घटकों एवं उनके परस्पर संबंधों का प्रत्यक्ष दर्शन, व्यक्तिगत अनुभव एवं अन्य संसाधनों (दृश्य एवं श्रृव्य) के माध्यम एवं रोचक भाषा के रूप में पहुँचाता है।

नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल पर इन्टरप्रेटर द्वारा विभिन्न साधनों के माध्यम से की गयी व्याख्या से पर्यटकों में निम्न लाभ दृष्टिगोचर होते हैं :-

- पर्यटकों का प्रकृति भ्रमण अधिक मनोरंजन एवं ज्ञान वर्धक हो जाता है।
- पर्यटकों में प्रकृति एवं उसकी प्रतिक्रियाओं की बेहतर समझ विकसित होती है।
- पर्यटकों एवं स्थानीय समुदाय में वनों एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित होती है।
- वन क्षेत्रों में स्थित प्राकृतिक ऐतिहासिक/सांस्कृतिक विरासतों (पुराने किले, धार्मिक स्थल, बावडियाँ, नदी, तालाब, झरने, शैलाश्रय एवं शैल चित्र आदि) के महत्व, इतिहास एवं उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित होती है।
- पर्यटकों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के प्रति उत्तरदायी व्यवहार विकसित होता है।
- जन सामान्य के माध्य विवादास्पद मुद्दों के प्रति व्यापक समझ विकसित होती है जिससे कि प्रबंधन के प्रति होने वाली गलतफहमियों का स्वयमेव समाधान हो जाता है।
- पर्यटकों के साथ-साथ स्थानीय समुदाय में भी प्रकृति के बारे में बेहतर समझ विकसित होती है, जिससे वनों एवं वन्य प्राणी संरक्षण में सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता है।

प्रकृति व्याख्या पथ को अधिक उपयोगी बनाने हेतु उसे स्थल पर ले-आउट किया जाना एवं उपलब्ध प्राकृतिक स्थलों को प्राकृतिक प्रक्रियाओं से सम्बद्ध किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य है। क्षेत्र में उपलब्ध अधिकतम प्राकृतिक विविधता का समावेश नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल में किया जाना चाहिए

- विभन्न प्रकार के पारिस्थितिकीय तंत्र जैसे घास का मैदान (ग्रास लैण्ड) नम भूमि (Wetland) वृक्ष (Tree), एवं वन पारिस्थितिकीय तंत्र (forest ecosystem) आदि।
- विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ, वृक्ष, झाड़ियाँ, घास, लतायें, औषधीय पौधे, उनके कंद, फल एवं फूल आदि।

- विभन्न वन्य प्राणियों की उपस्थिति के प्रमाण स्वरूप साक्ष्य चिन्ह जैसे कि उनके गोबर (फीकल मैट्र) ड्रॉपिंग्स, एन्टलर्स, कंकाल, सेही के काँटे, दीमक के माउण्ड, चीटियों के घोंसले, प्राणियों द्वारा वृक्षों एवं भूमि पर बनाये गये अथवा छोड़े गये चिन्ह आदि।
- वन क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की मिट्टी एवं चट्टानें (क्षेत्र में उपलब्धतानुसार) एवं उन पर उगने वाले वानस्पतिक प्रजातियों की जानकारी।
- प्राकृतिक एवं कृत्रिम जल स्त्रोत जैसे तालाब, नदी, झील, झरना, चेक डैम, सॉसर water hole, wallows आदि।
- प्रकृति व्याख्या पथ का प्रारंभ एवं समाप्ति स्थल एक ही स्थान पर रखना चाहिए।
- प्रकृति व्याख्या पथ पर भ्रमण के दौरान गाईड/इन्टरप्रेटर उपलब्ध न होने की स्थिति में पठनीय सामग्री, दृश्य एवं श्रव्य सामग्री, उपकरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

सारांशतः नेचर इन्टरप्रिटेशन ट्रेल, सम्पूर्ण वन एवं प्रकृति का एक एवं इसके विभिन्न घटकों के मध्य पारस्परिक संबंधों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। साथ की गाईड के रूप में स्थानीय युवक/युवतियों को रोजगार दे सकते हैं।

आइये "प्रकृति व्याख्या पथ" के माध्यम से अपनी प्रकृति और जंगल के रहवासियों को समझें।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा संचालित प्रमुख गतिविधियां

जिला स्तरीय जैवविविधता क्विज़- 2021

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता क्विज़- 2021 जिला स्तर पर क्विज़ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड एवं लोक शिक्षण विभाग संचालनालय भोपाल के संयुक्त - तत्वावधान में प्रदेश में सभी 52 जिलों के विद्यालयीन छात्र-छात्राओं में जैवविविधता जागरूकता उत्पन्न करने के दृष्टिकोण से जिला स्तरीय Madhya Pradesh Biodiversity quiz Programme- 2021 का आयोजन जिला मुख्यालय पर वन्य प्राणी सप्ताह के अवसर पर दिनांक 05.10.2021 को किया गया। प्रदेश के विद्यालयीन छात्र-छात्राओं (कक्षा 9वीं से 12वीं तक) द्वारा इस कार्यक्रम में भाग लिया गया। इस कार्यक्रम का जिला स्तरीय क्विज कार्यक्रम प्रदेश के समस्त 52 जिलों के जिला मुख्यालय स्तर पर वन मण्डलाधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा आयोजित किया गया है। म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा प्रतिभागियों के लिए पाठ्य सामग्री बोर्ड की बेवसाइट पर द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) टेक्स बुक तथा प्रश्न बैंक के रूप में उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही बोर्ड द्वारा जैवविविधता आधारित लघु फिल्म के वीडियो में वेबसाइट पर उपलब्ध कराये गये।

प्रदेश के कुल 2491 विद्यालयों का पंजीयन प्रतियोगिता हेतु दर्ज किया गया। जिनमें से पंजीकृत विद्यालयों की 2187 प्रतिभागी टीमों, 104 जिला क्विज मास्टर, 2187 प्रभारी शिक्षक एवं 260 सहयोगी विभागों के अधिकारियों सहित

सम्पूर्ण क्विज कार्यक्रम में कुल 9112 प्रतिभागियों ने लाभ प्राप्त किया। कोविड-19 के दिशानिर्देशों का परिपालन करते हुए सीमित सदस्यों द्वारा प्रतियोगिता में प्रतिभागिता दर्शायी गई। जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में बोर्ड द्वारा प्रथम विजेता को राशि रू. 3000.00 द्वितीय विजेता को राशि रू. 2100.00 एवं तृतीय विजेता को राशि रू. 1500.00 का पुरस्कार प्रदान किया गया।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल द्वारा वन विहार के प्रांगण में दिनांक 01-07 अक्टूबर 2021 को राज्य स्तरीय वन्य प्राणी संरक्षण सप्ताह-2021 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा स्टॉल स्थापित किया गया एवं जैवविविधता संरक्षण की दृष्टि से स्कूली छात्र-छात्राओं एवं आमजन हेतु स्पॉट प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 01.10.2021 को कार्यक्रम का शुभांरभ श्री अशोक कुमार बर्णवाल प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन बल प्रमुख (म.प्र.) वन विभाग, श्री जसबीर सिंह चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा द्वारा बोर्ड के स्टॉल का निरीक्षण कर स्पॉट प्रश्नोत्तरी का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव महोदय एवं वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा स्पॉट प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में प्रतिभागिता की गई। बोर्ड के तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा कार्यक्रम के सम्पूर्ण दिवसों में मध्यप्रदेश जैवविविधता स्पॉट प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत छात्र-छात्राओं एवं आमजनों से जैवविविधता से संबंधित प्रश्न पूंछकर जैवविविधता से संबंधित मार्गदर्शन किया गया। दिनांक 07.10.2021 को कार्यक्रम के समापन समारोह में श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन बल प्रमुख (म.प्र.) वन विभाग द्वारा स्पॉट प्रश्नोत्तरी विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं गिफ्ट हेम्पर वितरित किये गये एवं इसी अवसर पर मध्यप्रदेश के पक्षियों की संकटग्रस्त प्रजातियों पर आधारित पुस्तक " Book on Threatened Birds of M.P." एवं मध्यप्रदेश राज्य ऑनलाइन जैवविविधता क्विज-21 (राष्ट्रीय स्तर) के पोस्टर का विमोचन किया गया।

"अंतर्राष्ट्रीय वन मेला 2021- आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में बोर्ड द्वारा जैवविविधता प्रदर्शनी

''आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित (वन विभाग) मध्यप्रदेश शासन द्वारा भोपाल में दिनांक 22 से 26 दिसम्बर 2021 तक अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला 2021 का आयोजन किया गया। इस वर्ष वन मेला की विषय वस्तु ''लघु वनोपज से स्वास्थ्य सुरक्षा'' थी। वन मेला का शुभारंभ दिनांक 22.12.2021 को माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, मध्यप्रदेश शासन, डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन एवं श्री विश्वास, माननीय मंत्री, चिकित्सा शिक्षा, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास विभाग, मध्यप्रदेश शासन, श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश एवं श्री पुष्कर सिंह, प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित, भोपाल आदि के द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता की प्रदर्शनी का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल द्वारा प्रदर्शित की गई प्रदर्शनी मेले में लगभग बीस हजार व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा जैवविविधता प्रदर्शनी स्टॉल पर जैवविविधता प्रबंधन समिति बीजापुर- जिला अनूपपुर, जैवविविधता प्रबंधन समिति, सोठावाड़ी, जिला-सिवनी द्वारा बोर्ड के स्टॉल में धान्य फसलें, तिलहनी फसलें, सब्जियों के बीज, कंदमूल एवं औषधीय पौधों की प्रदर्शनी लगाई गई।

मान. राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल एव माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया।

बोर्ड द्वारा संचालित प्रमुख गतिविधियां-

- **स्पॉट क्विज़ का आयोजन** मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता स्पॉट क्विज़- 2021 का आयोजन किया गया एवं प्रत्येक दिवस के विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा सदस्य सचिव के निर्देशन में बोर्ड के समस्त स्टॉफ द्वारा वन मेला में सक्रिय रूप से भाग लिया गया।
- **जैवविविधता से संबंधित प्रचार सामग्री का वितरण-** बोर्ड द्वारा प्रचार सामग्री जिसमें जैवविविधता ब्रोशर, पक्षीयों के घर, बुकमार्क, लिफलेट्स, जैवविविधता संरक्षण से संबंधित पुस्तक आदि पुस्तक का वितरण किया गया।
- जैवविविधता प्रदर्शनी में आगन्तुकों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित जैवविविधता नमूनों से संबंधित विस्तारपूर्वक सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की गई तथा विज़िटर रजिस्टर में अपने अभिमत दर्ज किये गये।
- ऑडियो विजुअल प्रचार-प्रसार-जैवविविधता प्रदर्शनी में टेलीविज़न के माध्यम से जैवविविधता संरक्षण, संवर्धन एवं लाभ का प्रभाजन, बच्चों से संबंधित चलचित्र, लोक जैवविविधता प्रबंधन समिति एवं लोक

जैवविविधता पंजी निर्माण से संबंधित चलचित्र, स्पॉट क्विज़ से संबंधित प्रश्नों को टेलिविज़न के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

- **वन मेला समापन समारोह-** अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला 2021 के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 26.12.2021 को मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल, मध्यप्रदेश के मुख्य अतिथि, डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन, श्री विश्वास सारंग, माननीय मंत्री, चिकित्सा शिक्षा, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास विभाग, मध्यप्रदेश शासन, श्री अशोक बर्णवाल, प्रशासक, मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश एवं श्री पुष्कर सिंह, प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित, भोपाल आदि के द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता की प्रदर्शनी का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया।
- **पुरस्कार समारोह-** अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला समिति के द्वारा जैवविविधता प्रदर्शनी का अवलोकन करने के उपरान्त अंतर्राष्ट्रीय वन मेला के समापन समारोह में डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु **द्वितीय स्थान** आने पर प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित (वन विभाग) मध्यप्रदेश शासन द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल को प्रदर्शनी द्वितीय स्थान ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

पुरस्कार समारोह-अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला समिति के द्वारा जैवविविधता प्रदर्शनी का अवलोकन करने के उपरान्त अंतर्राष्ट्रीय वन मेला के समापन समारोह में डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु द्वितीय स्थान आने पर प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय वन मेला-2021

थूना अनुसंधान केन्द्र

सामाजिक वानिकी वृत्त, भोपाल वन विस्तार इकाई सीहोर

स्थल का नाम : थूना अनुसंधान केन्द्र, खसरा क्रमांक 256/22 थूना

क्षेत्रफल : 125.5 हेक्टर

स्थापना वर्ष : 1996-97

क्षेत्र में पाए गए वन्यप्राणी : नीलगाय, लगभग 50, कालाहिरण लगभग 250, मोर 40 तीतर 500, बटेर 700, टिटेहरी 50 एवं अन्य प्राणी तथा सरीसर्प।

क्षेत्रफल : 3.50 हे.

रोपण वर्ष : 2020-21

जीन बैंक स्थापना हेतु RET, फाइकस एवं फलोद्यान वृक्षारोपण
क्षेत्रफल :- 3.50 हे. | रोपण वर्ष:- 2020-21

रोपित प्रजाति			
क्रमांक	**प्रजाति**	**रोपित प्रजाति संख्या**	**रोपित पौधा संख्या**
1.	दुर्लभ एवं संकटापन्न	27	450
2.	फाइकस प्रजाति	12	40
3.	फल प्रजाति	12	110

बांस रोपणी		
प्रजाति	**बेड संख्या**	**बांस राईजोम संख्या**
कटंग बांस	166	166000
देशी बांस	70	70000
योग	236	236000

बांस पौध संख्या		
पुर्व के उपलब्ध पौधे	**नवीन पौधा तैयारी**	**कुल**
100000	100000	200000

वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन

वर्मी कम्पोस्ट एच.डी.ई.पी. बंड संख्य :	158
वर्मी कम्पोस्ट का कुल उत्पादन :	1081 क्विटंल
निवर्तन :	481 क्विटंल
रोपणी हेतु उपयोग :	300 क्विटंल
रोपणी में शेष उपलब्ध :	300 क्विटंल

थूना रोपणी अंतर्गत अधोसंरचना

सीड स्टोर

योजना- ग्रीन इंडिया योजना GIM

निर्माण वर्ष- 2021- 22 | लागत राशि- 10.00 लाख

लेबर हट

योजना- ग्रीन इंडिया योजना GIM

निर्माण वर्ष- 2021- 22 | लागत राशि- 10.00 लाख

वनरक्षक नाका

योजना - विभागीय मद

निर्माण वर्ष - 1976 | लागत राशि - 0.20

जैविक खाद भण्डारण कक्ष

योजना - विभागीय मद

निर्माण वर्ष - 2002-03 | लागत राशि - 1.50 लाख

सिंचाई व्यवस्था

ट्यूब वेल, सबमर्सिबल पम्प, कुंआ, माईक्रो स्प्रिंकलर, ऐक्यूरेन सिस्टम

योजना - कैम्पा मद

निर्माण वर्ष - 2020- 21 | लागत राशि - 9.00 लाख

वन विभाग ने महिलाओं को जोड़ा स्वरोजगार से

कभी चोरी से जंगल काटती थी, अब पेपरमेशी से टाईगर - मगरमच्छ बनाकर कमा रहीं लाखों रुपए

वन विभाग ने वन ग्राम की महिलाओं को जोड़ा स्वरोजगार से, एक लाख पेड़ कटने से बचाए। कभी जंगल को काटने से बचाती हैं बल्कि टाईगर, मगरमच्छ घड़ियाल बनाकर लाखों रुपए कमा रहीं है। दरसल, वन विभाग ने अवैध रूप से लकड़ी काटने वाली महिलाओं के खिलाफ प्रकरण दर्ज करने की वजाय उन्हें स्वरोजगार से जोड़ दिया।

विभाग के अधिकारियों के अनुसार औबेदुल्लागंज वन डिवीजन की डिप्टी रेंजर शशि अहिरवार ने गांव की महिलाओं को जोड़कर एक समूह बनाया। उनका विश्वास जीतने के लिए महिलाओं को पहले अपना मुखबिर बनाया। उन्हें क्रिएटिव वर्क से जोड़कर पेपरमेशी के क्रॉफ्ट बनाना सिखाया। इनका काम वन विभाग के अधिकारियों को इतना पसंद आया कि उन्होंने विभाग में होने वाले विभिन्न कार्य में इन महिलाओं के बनाए क्रॉफ्ट को खरीदकर स्मृति चिन्ह के रूप में देना शुरू किया।

अब इन महिलाओं को इतना पसंद आ रहा है कि प्रदेश से ही नहीं बल्कि पूरे देश से पेपरमेशी से कई तरह के क्रॉफ्ट बनाने के ऑर्डर मिल रहे हैं। डिप्टी रेंजर शशि अहिरवार के अनुसार वन ग्राम महिलाएं पहले चोरी छिपे पेड़ काटती थीं। हर साल धीरे-धीरे हजारों पेड़ कट जाते थे। इसके बाद उन्होंने महिलाओं और वन ग्राम के रहवासियों से बातचीत शुरू की। उनका विश्वास जीता। उन्हें अपना मुखबिर बनाया। जब महिलाएं उन पर विश्वास करने लगीं तो उन्होंने अपनी समस्या सामने रखीं। उनका कहना था कि पेड़ नहीं काटेंगे तो अजीविका कैसे चलाएंगे। यह बात अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सामने रखी। उन्हें सुझाव दिया कि महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ दिया जाए। चूंकि मुझे पेपरमेशी से क्रॉफ्ट बनाने का काम आता था तो गांव की महिलाओं को जोड़कर क्रॉफ्ट बनाना सिखाया। अब वे इतनी महिला माहिर हो गई हैं कि वे अपने मन से कई वन्य प्राणियों की कृति पेपरमेशी से बना लेती हैं। इन महिलाओं ने जंगल से लकड़ी काटना बंद कर दिया, इससे लाखों पेड़ कटने से बच गए। अब इनके बनाए क्रॉफ्ट प्रदेश सहित पूरे देश में पहचाने जाने लगे हैं। ये महिलाएं अब 5 लाख रूपए से अधिक की कमाई का चुकीं हैं। महिलाओं की कला का नमूना जल्दी विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों में देखने को मिलेगा।

वन संरक्षण एवं वन संवर्धन हेतु जंगल यात्रा संस्मरण

रमेश कुमार श्रीवास्तव अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक कैम्पा एवं निगरानी एवं मूल्यांकन

मुख्य वन संरक्षक शिवपुरी के पद पर रहते हुए दिनांक 03.12.2014 को "जंगल यात्रा" प्रारम्भ की गई। सर्वप्रथम यह कार्यक्रम शिवपुरी वन मण्डल के करैरा परिक्षेत्र में किया गया जिसमें 25 वनकर्मियों ने भाग लिया। उनके द्वारा भ्रमण के दौरान हुए अपने अनुभव को लिपिबद्ध किये गये।

परिक्षेत्र करैरा 13.09.2015

परिक्षेत्र करैरा 13.09.2015

परिक्षेत्र गुना उत्तर 08.09.2015

परिक्षेत्र गुना उत्तर 08.09.2015

प्रारम्भ में इस कार्यक्रम की परिकल्पना दूरस्थ वनांचलों में वन कर्मियों की उपस्थिति दर्ज न होने तथा ग्रामीणों से सम्पर्क की कमी के नकरात्मक परिणामों को कम करने के उद्देश्य से की गई थी। कालांतर में विभिन्न परिक्षेत्रों की जंगल यात्राओं में कई नये आयाम जैसे वन सुरक्षा, वानिकी गतिविधियाँ, जल स्त्रोतों का संरक्षण, वन्य प्राणी संरक्षण आदि जुड़ गये।

यह कार्यक्रम शिवपुरी वृत्त में लगातार दो वर्षों तक चला। वृत्त के 17 परिक्षेत्रों के अंतर्गत 2014-15 में 288 एवं 2015-16 में 341 कर्मचारियों ने भाग लिया। वर्ष 2015-2016 की जंगल यात्रा की थीम "जैव विविधता" संरक्षण रखी गई। वन कर्मियों से व्यक्तिगत पूछताछ में यह पता चला कि उक्त कार्यक्रम से वनकर्मियों में नई उर्जा का संचार हुआ तथा उनके दृष्टिकोण में सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

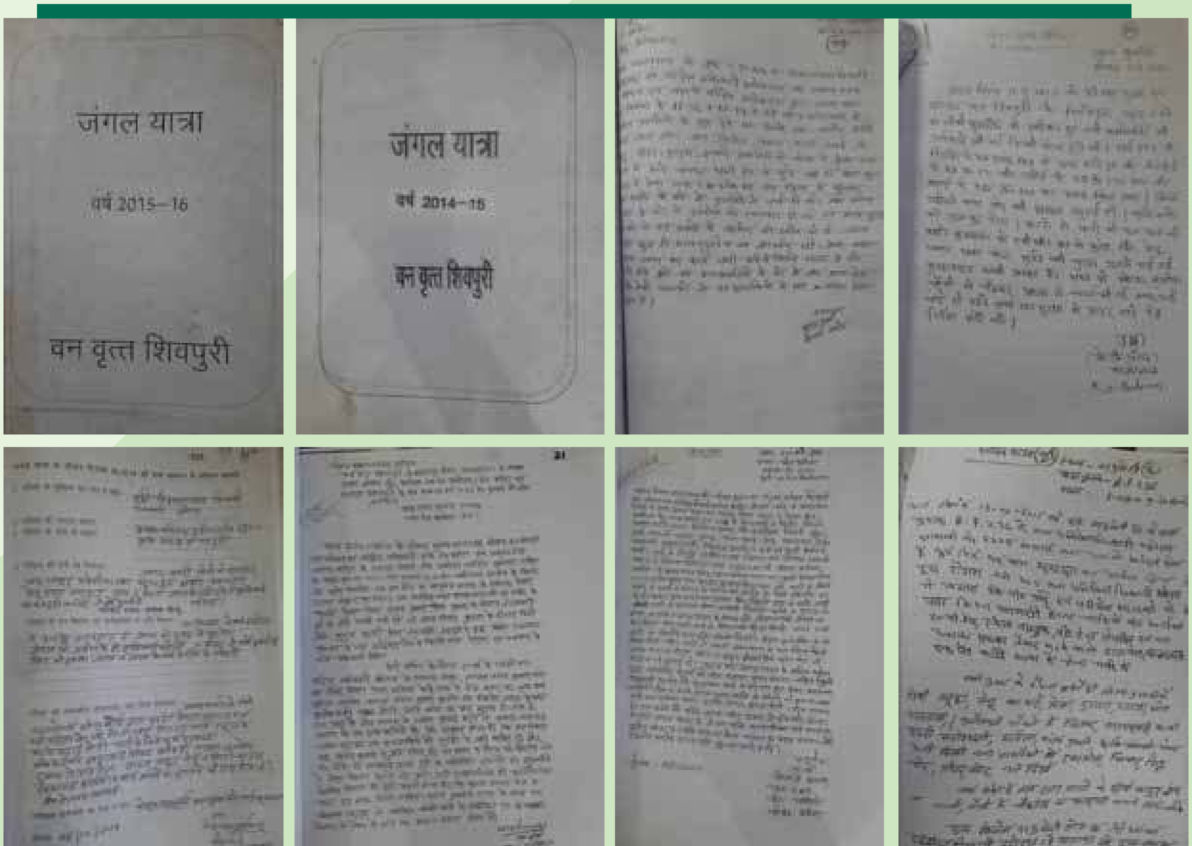

जंगल यात्रा के दौरान वन कर्मियों द्वारा लिपिबद्ध संस्मरण

वर्ष 2015-2016 के पश्चात दिनांक 30.08.2019 को छतरपुर वन मण्डल के छतरपुर परिक्षेत्र में मुख्य वन संरक्षक छतरपुर, वन मण्डलाधिकारी छतरपुर सहित लगभग 20 वन कर्मियों के साथ जंगल यात्रा की गई थी। वनकर्मियों द्वारा अपने लिखे गये संस्मरणों में विभिन्न प्रकार के तथ्यों का वर्णन किया गया है। साथ ही चर्चा में इस बात को माना कि यह कार्यक्रम एक सकारात्मक उर्जा का संचार करता है जो परोक्ष रूप में वन संरक्षण एवं वन संवर्द्धन में सहायक होता है।

छतरपुर परिक्षेत्र 30.08.2020

छतरपुर परिक्षेत्र 30.08.2020

दिनांक 28.08.2021 के शिवपुरी वन मण्डल के अल्प प्रवास के दौरान भी करैरा परिक्षेत्र के अमोला बीट में जंगल यात्राा की गई। उक्त कार्यक्रम में मुख्य वन संरक्षक शिवपुरी, वन मण्डलाधिकारी शिवपुरी, उप वन मण्डलाधिकारी करैरा एवं परिक्षेत्र अधिकारी करैरा सहित 12 वन कर्मियों ने भाग लिया। उनके संस्मरण के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि वनकर्मियों ने

अपने-अपने रुचि के हिसाब से प्रकृति का वर्णन किया गया है। किसी ने पक्षियों के कलरव, किसी ने पानी की ध्वनि तथा किसी ने जंगल की बनावट, प्रजातियों के विषय आदि में संक्षिप्त विवरण लिखा है। इस कार्यक्रम से वन कर्मियों में काफी उत्साह रहा जो परोक्ष रूप से वनों के प्रति संरक्षण एवं संवर्द्धन के प्रति रुचि उत्पन्न होने की सम्भावना है।

अमोला बीट, शिवपुरी वनमण्डल 28.08.2021

जंगल यात्रा के दौरान वनकर्मियों के अनुभव के आधार पर निम्नानुसार लाभ परिलक्षित होते हैं:-

1. अधिकारियों कर्मचारियों में वनों की संरचना एवं संवर्द्धन के प्रति नई सोच का जन्म हुआ।
2. अपने वन क्षेत्र की दशा में किस प्रकार का परिवर्तन हो रहा है।
3. वनकर्मियों में नई अभिरुचियों यथा बर्ड वॉचिंग, ट्रैकिंग की ओर रुझान बढ़ा।
4. अधिनस्थ कर्मचारियों में परस्पर सहयोग की भावना में वृद्धि हुई तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सीधे संवाद का अवसर प्राप्त हुआ।
5. प्रकृति एवं जनता के करीब आने का सुअवसर प्राप्त हुआ।
6. नई ऊर्जा का संचार हुआ।

इस जंगल यात्रा में कई आयामों जैसे कि विभिन्न वन क्षेत्र की भू-आकृति, वन संरचना, वन का प्रकार एवं श्रेणी वनों में जल के स्त्रोतों की स्थिति , वनों के पास के रहने वालों के परिवेश, उनकी प्रथायें, उनकी अजीविका एवं अन्य वो सभी कारक जो वनों एवं वन के करीब रहने वाले समुदायों के विकास के प्रति आवश्यक हैं, जोड़े जा सकते हैं। उक्त कार्यक्रम में वनकर्मियों से प्राप्त लिपिबद्ध किये गये अनुभव के अध्ययन से पता चलता है कि वनकर्मियों की रुचि, उनके विचार, उनकी भाषा, उनके दृष्टिकोण तथा जंगल के प्रति रुझान किस प्रकार है। उनके अनुभव के आधार पर स्थानीय स्तर पर, वानिकी गतिविधियों की योजना निर्माण एवं क्रियान्वन में उसका उपयोग किया जा सकता है।

डायनासोर फासिल नेशनल पार्क- बाग : एक विस्तृत परिचय

जीवन की खोज में अनगिनत टिमटिमाते नक्षत्र आदि से निराश हो कर जब-जब हम पुन: पृथ्वी की ओर रुख करते हैं तो घर की पालतू बिल्ली भी अनन्त विस्मयकारी सृष्टि प्रतीत होती है। जीवन पृथ्वी की वो पहली विशेषता है जो इसे सभी पृथ्वीवासियों के लिए पर्यटन योग्य बनाती है। यह जीवन, विविधता से इतना लबरेज है कि लगभग प्रतिवर्ष कोई न कोई अज्ञात जीव खोजा जा रहा है जिसे हम मानवों द्वारा जू या जंगल में पहले कभी नहीं देखा गया।

विहंगम विविधता के साथ आकाश में उड़ रहे, पानी में तैर रहे और जमीन पर दौड़ रहे जीवन की दुनिया ही गजब अलग होती है। इस गाढ़े अंतर से सभी को लगता है कि बिल्ली की उत्पत्ति और मछली की उत्पत्ति निश्चित ही अलग-अलग हुई होगी। हम कतई सहज नहीं हो पाते कि इनके समेत सभी जीवों के सुदूर पूर्वज एक ही हैं। उस नितांत भिन्न और सरल पूर्वज और उनसे हमारे विकास की दास्तान सम्भवत: उस जू या जंगल के किसी कोने की जमीन में ही जीवाश्मों की शक्ल में दबी पड़ी हो। थोड़े से प्रयास से उन जीवाश्मित पूर्वजों का आज के रँगबिरंगे जीवन के साथ-साथ जीवन के दर्शनभरा पर्यटन भी किया जा सकता था। वर्तमान जीवन के पटल पर विस्मयकारी पूर्वजों का गम्भीर दर्शना के साथ उद्भासित किया जाना पृथ्वी पर जीवन के सम्पूर्ण पर्यटन की दूसरी महती आवश्यकता है।

पृथ्वी पर जीवन के पर्यटन की तीसरी और सबसे विहंगम विषयवस्तु जीवन से परे वह विहंगम ग्रहीय घटनाक्रम हैं कालानुक्रम में जीवन में विविधता और निरन्तर विकास के मूल कारण रहे हैं। जीवन की इस विजय यात्रा में वे घटनाक्रम भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जो जीवन की ग्रहीय विलुप्ति का भी कारण बने।

वर्तमान जीवन के विकास के पृथ्वी में गर्भित सूत्र एक तरह से यह पृथ्वी ग्रह का अपने स्वयं का अध्यात्म है। बोधपूर्वक जब हम वर्तमान स्वरूप से आदि स्वरूप की ओर रमण करते हैं तो प्रतीत होता है कि पृथ्वी आध्यात्मिक चेष्टा कर रही है क्योंकि हम भी पृथ्वी हैं।

विलक्षण नर्मदा घाटी महातंत्र -

प्रकृति विषयक किसी भी प्रकार के पर्यटन के लिए किसी भी प्रकार के निर्धारित स्केल पर नर्मदा घाटी सर्वोच्च प्राथमिकता पर पाई जा सकती है। जीवन के संपूर्ण पर्यटन के संदर्भ में भी प्राकृतिक वैभवों का सबसे सघन वितरण नर्मदाघाटी में मिलता है-

- नर्मदा घाटी, विलुप्त गोंडवाना महाद्वीप पर पूर्व से उपस्थित थी जिसके विखंडन से कालांतर में चारों ओर से समुद्र से घिरे भारत के आदि स्वरूप का उदय हुआ था। नर्मदा घाटी की उत्पत्ति प्रीकेम्ब्रियन काल की घटना है यह ग्रह की सबसे प्रारंभिक नदियों में से एक है।
- जल, ब्रह्मांड में जीवन की उत्पत्ति और प्रश्रय की प्राथमिक आवश्यकता माना जाता है।
- कई प्रलयों और कल्पांतरों से होकर भी नर्मदा-जलराशि किसी न किसी व्यापक जलराशि के रूप में ग्रह के थल मण्डल पर विद्यमान रही। कल्प-कल्पांतरों के अनुकूल छटा के जीवों को यह जलराशि जीवाश्म भी बनाती रही और कई चट्टानों को रेत। प्रत्येक नदी जलराशि में मृत जीव को जीवाश्मित करने की तासीर अलग-अलग होती है, नर्मदा घाटी एक महत्त्वपूर्ण जीवश्म घाटी है।
- नर्मदा घाटी में नर्मदा के समांतर अपभ्रंश, ज्वालामुखीय डाइक, भूकंप पेटी, संरचनागत वैविध्य की चट्टानें और मृदा, जल प्रवाह में वैविध्य, तटों की ऊंचाई और ढाल में वैविध्य आदि की सघनता पाई जाती है। उपरोक्त कारणों से संपूर्ण घाटी में जैव विविधता भी अद्वितीय है।
- गोंडवाना से अलग होने के पश्चात भारत, आकाश में सूर्य की कर्क सक्रांति की भाँति पृथ्वी पर स्वयं की स्थिति मकर-अक्षांश से लेकर कर्क-अक्षांश तक बदलते आया है। इतनी विहंगम प्लेट-विवर्तिकी किसी संज्ञान रहे अक्षांशों के बदलने पर जीवों के स्वरूप में भिन्नता आती है।

"Tigers for India- A Rally on Wheels"

आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में केन्द्रीय वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के द्वारा आयोजित "Tigers for India- A Rally on Wheels" का आयोजन पूरे देश के 18 टाइगर स्टेट एवं 51 टाइगर रिज़र्व में किया जा रहा है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश अंतर्गत दिनांक 01 अक्टूबर 2021 से बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व से रैली का आरंभ किया गया जो कि क्रमश: संजय, पन्ना, सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व से होते हुये दिनांक 04.10.2021 को पेंच टाइगर रिज़र्व पहुंची। दिनांक 05 अक्टूबर को प्रात: माननीय विधायक सिवनी श्री दिनेश राय एवं अन्य जन प्रतिनिधियों, ग्रामीणों, स्कूल छात्र-छात्राओं, रिसोर्ट ऐसोसिऐशन के सदस्यों एवं अन्य वन्य प्राणी प्रेमियों की गरिमामय उपस्थिति में सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व के सहायक संचालक श्री संदेश माहेश्वरी के नेतृत्व में टीम से एन.टी.सी.ए. ध्वज को गरिमा एवं गर्व के साथ श्री अशोक कुमार मिश्रा क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिज़र्व द्वारा ग्रहण किया गया। उपरांत क्षेत्र संचालक द्वारा रैली के उद्देश्य से सभी को अवगत कराया गया। ग्रामीणों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माननीय विधायक ने उपस्थित स्कूल के छात्र-छात्राओं और गणमान्य नागरिकों को वन्यप्राणी संरक्षण के महत्व से अवगत कराया और मार्गदर्शन दिया। उपरांत हरीझंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। इस प्रकार भव्य रैली का शुभारंभ हुआ और मोटर सायकल सवार वनकर्मी और 04 पहिया वाहन से सुसज्जित रैली का घाटकोहका, बादलपार, सुकतरा, गोपालगंज, सिवनी, कान्हीवाड़ा, केवलारी होते हुये नैनपुर पहुंचकर समापन हुआ जहां ध्वज को ससम्मान कान्हा टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक श्री एस. के. सिंग एवं उनकी टीम को सौंप दिया गया।

रैली के दौरान घाटकोहका, बादलपार, सुकतरा एवं गोपालगंज में स्थान-स्थान पर स्कूल छात्र-छात्राओं, जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों द्वारा रैली का स्वागत किया गया। स्कूलों में रैली का स्वागत एवं वन एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा एवं संवर्धन हेतु जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किये गये जहां उपस्थित स्कूल छात्र-छात्रायें, शिक्षक, जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, वन विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों को वन्यप्राणी संरक्षण की शपथ दिलायी गयी एवं वृक्षारोपण कार्य किया गया। अत्यंत भव्य रैली को ग्रामीणों द्वारा अत्यंत सराहा गया उपरांत रैली सिवनी पहुंची जहां सिद्धी विनायक लॉन में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमति मीना बिसेन, श्री पार्थ जैसवाल मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सिवनी, जनपद अध्यक्ष श्रीमति प्रतीक्षा राजपूत, वन समिति सभापति जनपद पंचायत कुरई श्री लोचन सिंह मर्सकोले, श्रीमति शांताबाई एवं अन्य जन प्रतिनिधियों, मीडिया बंधुओं, सेवानिवृत्त वनकर्मचारियों/अधिकारियों, स्कूल के छात्र-छात्राओं एवं प्रबुद्ध नागरिकों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में पेंच टाइगर रिजर्व के डॉगसुंदर के कार्य करने के तरीके अपराधी को पकड़ने की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया गया।

रेस्क्यू स्क्वाड सिवनी द्वार सर्पों के विषय में जागरुक किया गया। आदिवासी छात्रावास की बालिकाओं द्वारा मनमोहक सांस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, वहीं कुं. चहल शर्मा द्वारा उपस्थित लोगों को वन्यप्राणी संरक्षण विषय में जागरुक किया। क्षेत्र संचालक द्वारा वन्यप्राणी संरक्षण की शपथ दिलायी गयी वहीं उपस्थित अतिथियों ने वन्यप्राणी संरक्षण के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करते हुये लोगों को इस दिशा में जागरुक करने का कार्य किया। कार्यक्रम के दौरान पेंच टाइगर रिजर्व द्वारा सेवा निवृत्त वनाधिकारी, कर्मचारियों को उनके सेवाकाल में सराहनीय योगदान के लिए सम्मानित किया। उपरांत रैली सिवनी शहर से होते हुये जन जागरुक करते हुये कान्हीवाड़ा की ओर प्रस्थान कर कान्हीवाड़ा पहुंची। जवाहर नवोदय विद्यालय में कान्हीवाड़ा में रैली का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्रायें, प्राचार्य एवं शिक्षक जनप्रतिनिधि, वन विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों को क्षेत्र संचालक द्वारा वन्यप्राणी संरक्षण का महत्व बताते हुये शपथ दिलायी गयी। तदोपरांत स्कूल प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया । इसके उपरांत रैली केवलारी पहुंची जहां जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों द्वारा रैली का स्वागत किया गया एवं वृक्षारोपण किया गया। इसके पश्चात् रैली नैनपुर

पहुंची जहां कान्हा टाइगर रिज़र्व के क्षेत्र संचालक एवं टीम ने रैली का स्वागत किया गया। क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिज़र्व द्वारा ध्वज क्षेत्र संचालक कान्हा टाइगर रिज़र्व को सौंपा और इस प्रकार भव्य रैली का पेंच टाइगर रिज़र्व सिवनी अंतर्गत समापन हुआ। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान श्री विक्रम सिंह परिहार सेवानिवृत्त क्षेत्र संचालक पेंच टाइगर रिज़र्व, श्री एस.के.एस. तिवारी वन मण्डलाधिकारी दक्षिण सामान्य वन मण्डल, श्री अधर गुप्ता उप संचालक पेंच टाइगर रिज़र्व, श्री बी.पी. तिवारी सहायक वन संरक्षक, श्री गोपाल सिंह उपवन मण्डलअधिकारी, श्री आशीष पाण्डे अधीक्षक, सभी परिक्षेत्राधिकारी सामान्य वन मण्डल एवं पेंच टाइगर रिज़र्व, वन कर्मचारी एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। इस सम्पूर्ण रैली का समापन कार्यक्रम दिनांक 07 अक्टूबर को कान्हा टाइगर रिज़र्व मण्डला में आयोजित किया जायेगा।

Janapav: Origin of Seven and Half Rivers

Janapav, situated in the Vindhyan Ranges, is considered to be the second highest point of Malwa region at an altitude of 854 meter above mean sea level. Well known for lush green forests and views of the region, the mountain top has a significant mythological value, as it is held to be the birthplace of Parashurama (the sixth avatar of Lord Vishnu).

Gographically, the place is of very significant importance, being the source toseven and half rivers and strategically forming the water divide between the Ganga basin in the north and Narmada basin to the south. Rivers Chambal,Gambhir, Ajnar and Sumariya drain into the Ganga basin while Rivers Choral,Balam, Karam and Nekedshwari flows into the Narmada basin. Karam and Nekedeshwari flowing in a single stream for a substantial length counted as one and half. All these rivers are believed to have originated from the holi water tank (Kund) right at the top of the mountain.

The area has a huge ecotourism potential. Madhya Pradesh Ecotourism Development Board has created a facility right at the base for overnight stay in a serene environment with lush green vegetation. The place is tailor-made for amateur trekkers and outdoor adventures.

The place is also famous for the fair that is held here every year on Kartik Purnima which is the first full moon after Diwali. A unique place where Mythology, Geography and Adventure converge.

The Madhya Pradesh Forest Department is committed towards conservation of the unique place and taking up measures towards keeping all the seven and half rivers live and rejuvenated

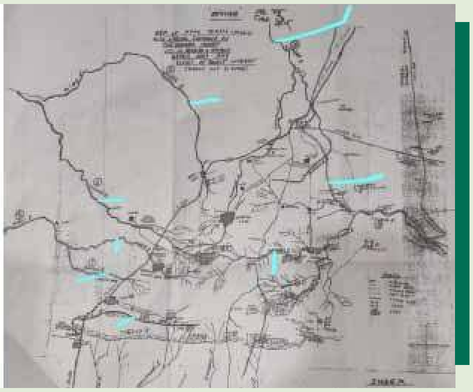

''पवन क्षिप्रा, हरित क्षिप्रा, स्वच्छ क्षिप्रा''- क्षिप्रा नदी को प्रवाहमान बनाने हेतु योजना

क्षिप्रा नदी मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के महू छावनी से लगभग 17 किलोमीटर दूर जानापाव की पहाड़ियों से निकली है यह स्थान भगवान विष्णु के अवतार भगवान परशुराम का जन्म स्थान भी बताया जाता है।

क्षिप्रा नदी को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करके मोक्ष देने वाली पवित्र नदी माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार ऋषि अत्री ने अपने दोनो हाथ ऊपर उठाकर हजारों वर्षों तक घोर तप किया था। तप पूरा होने पर जब उन्होंने आंखें खोली तो दो जलधारा बह रही थी। इन्हीं से क्षिप्रा नदी का उद्गम से चंबल नदी में मिलने तक शिप्रा नदी की लंबाई 195 किलोमीटर है।

क्षिप्रा नदी इन्दौर जिले की काकरी बरडी पहाड़ी से निकलकर इन्दौर, देवास एवं उज्जैन जिले से होते हुए रतलाम जिले की सीमा में प्रवेश कर चम्बल नदी में मिल जाती है। उज्जैन जिले में क्षिप्रा नदी की कुल लम्बाई लगभग 164 कि.मी. है, जो विकासखण्ड, उज्जैन, घट्टिया एवं महिदपुर से होकर गुजरती है। उज्जैन नगर निगम क्षेत्र के अन्तर्गत क्षिप्रा नदी की कुल लम्बाई 20 कि.मी. है।

रोपण प्रजातियाँ :- क्षिप्रा नदी किनारे वर्ष 2016 से 2018 तक		
क्र.	वृक्ष का आकार	प्रजाति का नाम
1.	बड़े वृक्ष	बड़, पीपल, पाकर, आम, नीम, अर्जुन, जामुन, शीशम, इमली, महुआ व अन्स।
2.	मध्यम	अमरूद, मौथली, कचनार, केसिया, सामिया, कदम्ब, जंगल जलेबी, सहजान, खजूर, खमेर।
3.	झाड़ीदार/छोटे	बांस, सीताफल, नींबू, कनेर, टिकोमा, सप्तपर्णी, ग्लिसरिसिडिया।
4.	घांस एवं औषधी	लूर्सन, बरसीम, गुनिया, सेंकरस, बरू, तुलसी आदि।
5.	बीज	बबूल, नीम, सुबबूल, खमेर, घांस, प्रजाति, औषधि प्रजाति।

हरे भरे पेड़ों से मुस्कुराई वीरान पहाड़ियां

वन सुरक्षा समति कीरतनगर अध्यक्ष श्री गेंदालाल कीर के सफल प्रयासों द्वारा कक्ष क्रंमाक- RF- 332, PF-778 के अंर्तगत 60 हे. वन क्षेत्र में 40000 पौधों का रोपण किया गया। जिसमें सुरक्षित किये गये पौधों की संख्या 10000 है। सागौन, बरगद, पीपल, शीशम, नीम, नीलगिरी, कचनार, सेमल, जंगल जलेबी, करंज, चिरोल, सीताफल इत्यादि प्रजाति के पौधों का रोपण किया गया।

भोजपुर मार्ग पर कभी निर्जन और वीरान रही पहाड़ियां हरे भरे पौधों को गोद में समेट मुस्कुरा रही हैं चट्टानों के ऊपर प्रकृित के रंग भरने का काम निखिल धाम आश्रम के संत अरिवंद सिंह की हठ से साकार हो सका है। जिसमें वन मण्डल ओबेदुल्लागंज के अंतगर्त आने वाली वन सुरक्षा सिमित कीरतनगर ने उसके क्षेत्राधिकार में आने वाले वनक्षेत्र के विकास एवं प्रबंधन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन चट्टानी निर्जन पहाड़ियों पर वृक्षारोपण कर इनको हरा-भरा करने के अत्यंत कठिन एवं अनूठे कार्य का प्रारंभ वर्ष 2006 में श्री अरिवंद कुमार सिंह द्वारा निखिल धाम आश्रम की स्थापना से हुआ। प्रारम्भ में वृक्षारोपण का कार्य आश्रम परिसर में किया गया एवं कुछ समय में ही आश्रम परिसर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधों से भर गया।

वर्तमान में निखिल धाम आश्रम के परिसर में लगे पेड़-पौधे

आश्रम पिरसर के पेड़-पौधों से भर जाने के कारण वर्ष 2009 में आश्रम परिसर के बाहर की चट्टानी पहड़ियां जो वन मण्डल ओबेदुल्लागंज की चिकलोद पिरक्षेत्र के कक्ष क्रमांक RF-332, PF -778 में आती है, पर वृक्ष लगाने का कार्य प्रारंभ किया गया। चट्टानी पहाड़ों पर वृक्ष रोपित करना सहज नहीं होता है। जिसके कारण पहले पौधे को जड़ जमाने में डेढ़ साल का समय लग गया। वन भूमि पर इस प्रकार वृक्षारोपण के कार्य को प्रारम्भ में वन भूमि पर अतिक्रमण के प्रयास के रूप में देखा गया एवं स्थानीय लोगों द्वारा इसका विरोध भी किया गया। परंतु तात्कालिक वन अधिकारियों ने किए जा रहे कार्य की महत्ता को देखते हुए सूझबूझ का पिरचय दिया एवं नवाचार की पहल करते हुए आश्रम को वन भूमि पर वृक्षारोपण की अनुमति दी एवं लगाए गए पौधों की सुरक्षा का दायित्व वन सुरक्षा समिति कीरतनगर को दिया गया। वन सुरक्षा सिमित के कारण स्थानीय लोगों का ना केवल विरोध कम हुआ साथ ही उनका सहयोग भी प्राप्त होने लगा। इस प्रकार वन विभाग एवं निखिल धाम आश्रम के मध्य आपसी सहयोग एवं समन्वय से इन वीरान एवं चट्टानी पहाड़ियों पर वृक्षारोपण का कार्य गति पकड़ा।

इस कार्य में निखिलधाम आश्रम एवं ट्रस्ट ने अपने निजी व्यय से वन क्षेत्र जो कि चट्टानी है जिसमें पुनरोत्पादन ना के बराबर था उसको सुरिक्षत कर पौध रोपण कार्य एवं उपस्थित पौधों को मिट्टी डालकर सुरक्षित किया। वृक्षारोपण किए

पौधों के आसपास मिट्टी के बण्ड तैयार किए गए तथा कुछ पूर्व के पौधों के आसपास भी मिट्टी के बण्ड तैयार कर उनको जीवित रहने में योगदान दिया है तथा उनकी सुरक्षा हेतु निजी व्यय से वन विभाग की अनुमित लेकर लगभग 01 किलोमीटर वन क्षेत्र की फेन्सिंग कार्य किया जा चुका है तथा शेष क्षेत्र में फेन्सिंग कार्य प्रगित पर है। आश्रम द्वारा किए गए उक्त कार्यों से चट्टानी वन क्षेत्र जोकि वृक्ष विहीन दिखाई पड़ता था अब वहाँ हिरयाली दिखाई देती है जिसका लाभ न केवल पर्यावरण अपितु मानव जाति की भावी पीढ़ियों को होगा।

निखिल धाम आश्रम द्ववारा मिट्टी के बण्ड बना कर रोपित

वन विभाग द्वारा उक्त कार्य में निखिलधाम आश्रम को पौधा रोपण एवं सुरक्षा हेतु जिस भी प्रकार की आवश्यकता पड़ी है उसकी पूर्ति वनविभाग द्वारा की गयी है। वनमंडल कार्यालय ओबेदुल्लागंज द्वारा वन सुरक्षा समिति कीरतनगर को वृक्षारोपण में सहयोग एवं सुरक्षा का दायित्व दिया गया एवं सिमित से प्रस्ताव अनुमोदित कराकर उक्त क्षेत्र में निखिल धाम आश्रम को कार्य करने एवं फेंन्सिंग किए जाने की अनुमित कुछ शर्तों के साथ दी गयी है। वन विभाग द्वारा पौधा रोपण की विधि एवं तकनीक का उपिस्थत रहकर ट्रस्ट को मागर्दशन दिया है तथा कार्य में आने वाली किसी भी किठनाई को तुरंत दूर किया है और यथा सम्भव मदद की है।

रोपित पौधों की सुरक्षा हेतु फेंन्सिंग कार्य

वन सुरक्षा समिति कीरतनगर द्वारा उपरोक्त कार्य में ट्रस्ट का पूर्ण सहयोग करते हुए उक्त क्षेत्र की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है साथ ही वृक्षारोपण या अन्य कार्यों में यदि किसी संसाधन की आवश्यकता पड़ी है तो समिति द्वारा वह सहयोग भी ट्रस्ट को किया गया है। समिति के प्रयास के कारण आसपास के गाँव के स्थानीय लोगों में पयार्वरण के प्रति जागरूकता आयी है एवं उनका सहयोग भी श्रमदान, सुरक्षा इत्यादि के रूप में प्राप्त हुआ है।

समिति सदस्य रोपण कार्य में सहयोग करते

परिणाम : आज से कुछ वर्षों पूर्व तक भोजपुर के लिए आने वाले लोगों को इतनी हिरयाली देखने को नहीं मिलती थी जितनी कि अभी मिलती है जहां कभी दूर-दूर तक केवल पत्थर नजर आते थे आज वहां सुंदर हरे भरे पत्तों और फूलों से युक्त लहराते वृक्ष नजर आते हैं एवं खाली पवर्तों पर हजारों की संख्या में दुर्लभ जड़ी बूटियों एवं वृक्षों की प्रजातियां लहरा रही हैं जो कि आगामी वर्षों में जनमानस के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

चट्टानी पहाड़ी पर लहराते हरे भरे पेड़

Rukhad Bison Retreat

G. S. Rathore

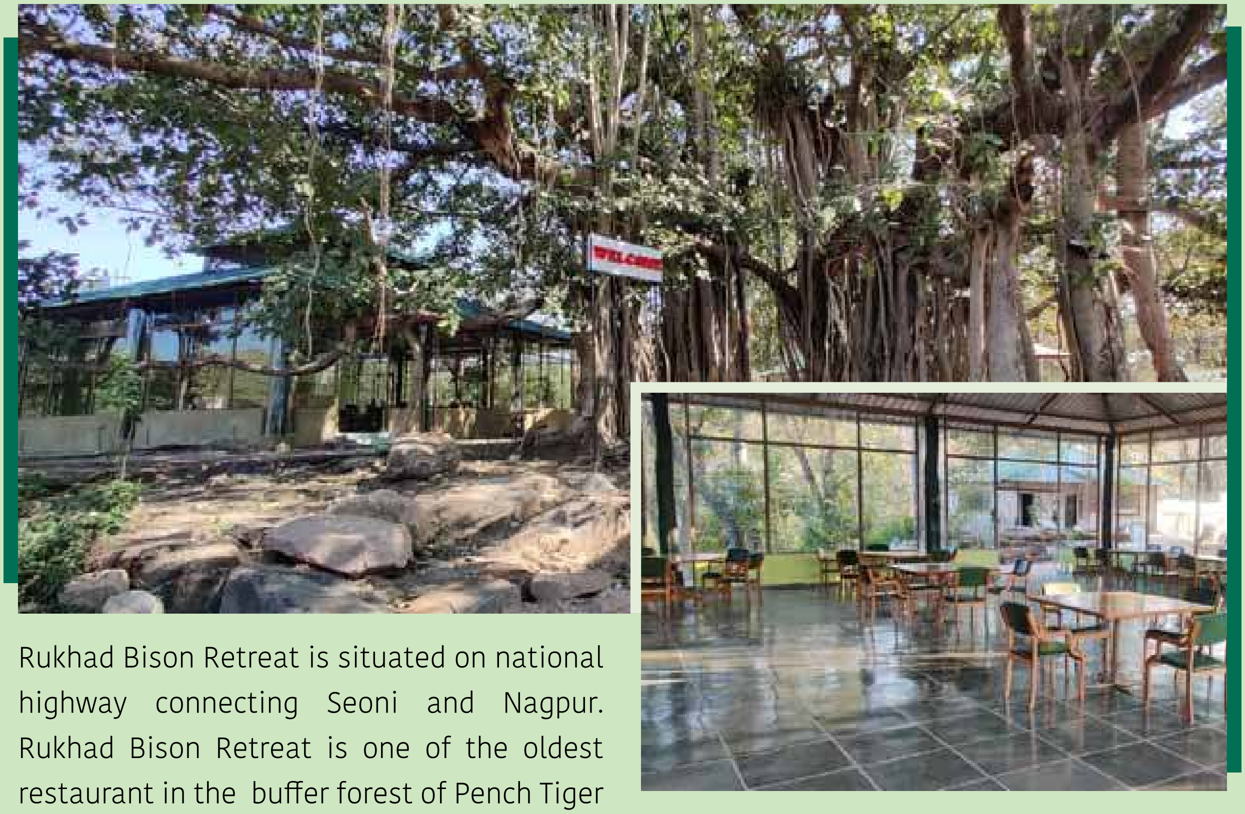

Rukhad Bison Retreat is situated on national highway connecting Seoni and Nagpur. Rukhad Bison Retreat is one of the oldest restaurant in the buffer forest of Pench Tiger reserve. There is a Banyan tree which is about 500 years old and it stands tall on a small hill and the Bison Retreat is situated adjacent to it. The Banyan tree looks magnificent from the highway and the experience of sitting under this tree is divine. We are developing this retreat into a nature destination with focus on conservation of forest and to sensitize people about the forest and wildlife around Rukhad. Our focus is to provide best food on the highway and the Divine experience of sitting under the Banyan tree in the nature. The property is outsourced by MP Ecotourism Development Board to Pench Jungle Resorts Private limited for development of beautiful and a nice resort and restaurant. This will provide employment opportunities to the youth of surrounding local areas. It would be a destination to promote the art and handicrafts and cuisine of Central India and in particular Madhya Pradesh. There is a Lake, called Dudhiya Lake, which is about 2 kms from the Bison Highway retreat it is inside the buffer zone of Rukhad and we are developing Tree houses and Jal Mahals for guests accommodation. For wildlife enthusiastic, Machans will be developed at Daldali lake and guests can stay overnight at these Machan and experience Jungle and wildlife.

ग्राम वन समिति, अमडिहा वन परिक्षेत्र बहरी वन मण्डल सीधी, वन वृत्त रीवा

वन परिक्षेत्र बहरी ग्राम वन समिति अमडिहा

संयुक्त वन प्रबंध संकल्प के प्रावधानानुसार वन परिक्षेत्र बहरी की बीट बहरी के कक्ष क्रमांक पी-932 रकवा 296.117 है. के बिगड़े वन क्षेत्र में ग्राम वन समिति अमडिहा का गठन वर्ष 1998 में किया गया। श्री रामसुन्दर पाण्डेय समिति के पहले अध्यक्ष निर्वाचित हुये वर्तमान में श्रीमती उषा पाण्डेय पति श्री श्यामलाल पाण्डेय समिति अमडिहा के अध्यक्ष हैं तथा समिति की कार्यकारिणी में कुल 15 सदस्य हैं एवं समिति में 60 सक्रिय सदस्य परिवार सम्मिलित हैं।

समिति को आवंटित वन भूमि पूर्व में 0.2 से 0.4 घनत्व की नग्न पहाड़ी होकर कार्य आयोजना में बिगड़े वनों के सुधार कार्यवृत्त में सम्मिलित था। शासन विभिन्न योजनाओं में 260.000 है. रिक्त वन भूमि में रोपण कार्य किया गया। विभिन्न प्रजातियों के कुल 4,93,000 पौधों का रोपण किया गया वन सुरक्षा कार्य तथा वृक्षारोपण कार्यों में समिति द्वारा वन अमले के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सतत् रूप कार्य किया गया। आज की स्थिति में समिति को आवंटित सम्पूर्ण वन भूमि सघन सागौन वनों से अच्छादित हो गई है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत समिति का माइक्रोप्लान तैयार किया गया है, इससे समिति को कुल 48,600 नग सागौन बल्लियां प्राप्त होंगी। समिति द्वारा बैठक आयोजित कर निर्णय लिया गया है कि माइक्रोप्लान क्रियान्वयन से प्राप्त होने वाली बल्लियों का वे निजी उपयोग न लेकर उससे टाल की स्थापना करेंगे, जिससे वन समिति को सतत् रूप से आय प्राप्त होगी तथा समिति सदस्यों को कम दरों पर सेन्टरिंग सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। इस प्रकार प्राप्त होने वाली आय से वन सुरक्षा के साथ-साथ अन्य आस्थामूलक कार्य समिति द्वारा सम्पादित करने की योजना बनाई गई। माइक्रोप्लान क्रियान्वयन प्रारम्भ करने के पूर्व के वर्षों में समिति द्वारा सामूहिक रूप से निस्तारी जलाउ, छोटी काष्ठ आदि को संवहनीय रूप से प्राप्त किया जाता रहा है।

निर्णयन: 3d नक्शों से वन प्रबंधन की मदद

डॉ. संजय कुमार शुक्ला, डॉ. अंकुर अवधिया

वन विभाग की आई. टी. शाखा के द्वारा विभिन्न वन मंडलों तथा संरक्षित क्षेत्रों के थ्री डी नक्शों का निर्माण किया जा रहा है। इन नक्शों के निर्माण के लिए ग्लोबल मल्टी रिज्योल्यूशन टैरैन एलीवेशन डेटा से आधारभूत संरचना का सृजन कर उसके ऊपर हाई रिज्योल्यूशन ट्रू कलर कंपोजिट सैटेलाईट इमेज की सतह चढ़ाई जाती है, जिससे किसी डायोरामा की तरह का मॉडल बन जाता है।

इस मॉडल के निर्माण के लिए शटल टोपोग्राफी मिशन, कैनेडियन डिजिटल एलीवेशन डेटा, स्पॉट 5 रिफरेंस थ्री डी डेटा तथा आईससैट डेटा के 7.5 आर्क सेकेंड स्पेशियल रिज्योल्यूशन डेम का उपयोग किया गया है, जो यूएसजीएस तथा नेश्नल जीयोस्पेशियल इंटेलिजेंस एजेंसी के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। इसके साथ ही वनमंडलों तथा संरक्षित क्षेत्रों के डेटा, जो कार्य आयोजना तथा सूचना प्रौद्योगिकी शाखाओं में उपलब्ध हैं, का समावेश कर थ्री डी मॉडल बनाया गया है। ये मॉडल विभाग की वेबसाइट पर एकल लॉगइन से प्राप्त किए जा सकते हैं।

कान्हा टाईगर रिजर्व का थ्री डी मॉडल

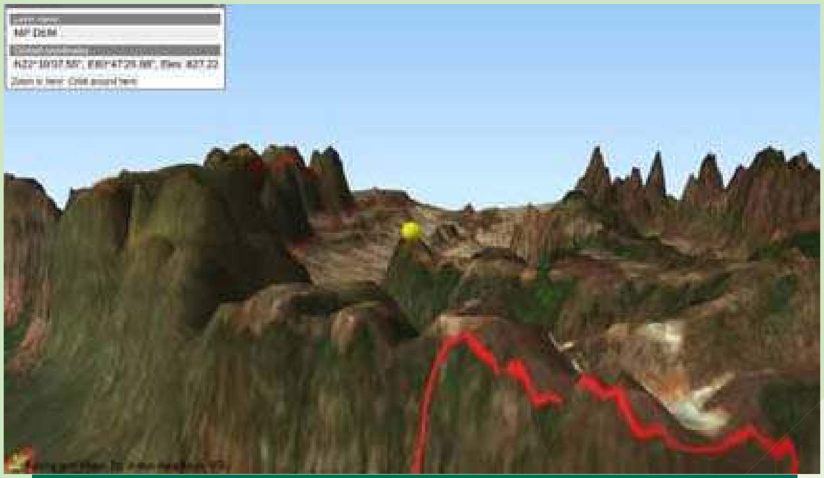

वॉच टॉवर से दृश्य का अनुकरण

इन थ्री डी मॉडलों पर पैन, टिल्ट, ज़ूम, आदि कार्य किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए अगर जल संरक्षण संरचना जैसे कि स्टॉप डैम का निर्माण करना हो, तो उपयुक्त स्थल चयन के लिए ड्रेनेज चैनल के ऐसे क्षेत्र, जहाँ दोनों तरफ उभार हों, का चयन किया जा सकता है। ऐसे स्थल का चयन कर जब उसे क्लिक किया जाए, तो स्थल के जी.पी.एस. कोऑर्डिनेट तथा एलीवेशन स्वत: प्राप्त हो जाएँगे, जिन्हें मैदानी कर्मचारियों को भेजा जा सकता है। हमें आशा है कि इन थ्री डी मॉडलों को मैदानी कार्यों तथा प्रबंधन में उपयोगी पाया जाएगा।

Plastic Free Plantations Initiative, complemented with Wealth from Waste

In Maihar Forest Subdivision of Satna Forest Division

Background :

Forest Department plants crores of saplings each year in its Plantation Sites. In 2021-22 also, roughly 2.7 crore poly-pot saplings have been planted across Madhya Pradesh only, including 4.5 lakhs in Maihar Subdivision (which includes Maihar, Amarpatan & Mukundpur Ranges) of Satna Forest Division.

After taking out the saplings for planting, waste Nursery Plastic Bags usually remain in the natural environment.

Initiative : During the inspection visits to plantation sites in mid-June, IFS Officer Trainee Anupam Sharma, SDO (Forest) Maihar Subdivision, identified this issue, and initiated the **"Plastic-Free Plantation"** Campaign. He explained the ill effects of plastic waste to the environment, and persuaded the local forest officials and village plantation workers to collect it, so that it can be disposed off in an eco-friendly manner, and plantation sites can become Plastic-Free. On their part, Forest officials and JFMCs fully supported this initiative, and started collecting and cleaning the waste plastic.

After the collection of plastic waste from each plantation site was over, Forest Officials of Maihar Subdivision signed a Certification-cum-Pledge for each Plantation site, officially declaring them **"Plastic-Free Plantation"**.

Also, the possible options for proper disposal of plastic waste (used nursery bags) were brainstormed.

- **In-situ processing and recycling** (into Granules, Briquettes, etc): It required high initial investment, technical expertise and regular supply of input plastic waste for operation. So, this option was not found feasible.
- **Giving/selling to Cement Factories:** Cement factories did not show any interest. Besides, use of plastic as combustible fuel itself can have negative ecological implications.
- **Handing it over to Maihar Nagar Palika:** No financial incentives/returns. Moreover, the plastic waste collected by Maihar Nagar Palika is dumped in a landfill.
- **Incineration (Waste to Energy):** Such facility/unit is not available in Maihar.
- **Selling to Scrap Dealer:** It ensured better returns, and facilitated recycling of plastic waste in bigger cities like Indore, Bhopal or Jabalpur. Seen as the best option here, it was decided to go ahead with this option.

Thus, local scrap dealers were contacted, and the one offering to buy the plastic waste at the highest rate (Rs.11-12/kg) was selected.

- Nursery Plastic Bags collected in Maihar Subdivision = Number of poly-pot saplings planted in Plantation Sites = roughly 4.5 Lakh
- Weight of plastic bags = around 4,900 kg
- Money received by selling this plastic waste to Scrap Dealer = around Rs. 55,000/-
- Transportation Cost was very less because most of the plastic bags were carried from plantation sites to a common point by different Forest officials, whenever they travelled to the sites for inspection. Additionally, the Scrap Dealer himself picked up the plastic bags from some nearby sites.

Please Note: Cleaning of Plastic Bags is very crucial otherwise the Scrap Dealer may not accept the plastic waste, or will purchase it at very low rate. To ensure this, multiple reminders were issued in Maihar. Demonstrations were also given on the field, on how to clean the plastic quickly by rubbing off the soil & removing pebbles, stones, twigs, etc. If dirt remains even after rubbing or beating, then the plastic bags can be washed (say, in a drum), and then put in a Bamboo basket, so that water drains out.

Utilization of Money:

From the money so obtained, the following items were procured:

- **Bio-Methanation Plant** (volume 1m3, processes 5kg waste/day, produces 450gm gas/day): It was procured from Vivekananda Kendra–NARDEP at subsidized rates, and installed at Maa Sharada Devi Temple Management Committee's Old-Age Home. Flowers & garlands offered to Maa Sharada Devi, which at one time adore Mata, soon rot on the ground under human feet or in landfills. This plant will convert flower waste from Maa Sharada Devi Temple and Kitchen waste from Old-age home to Cooking gas and Organic Manure Slurry.

- **Oil Press/Expeller Machin**e (processes 4-8kg oilseeds/hr, rating 650W): It was handed over to Bareh Bada village JFMC after training the locals in machine operation. The machine will be used to extract oil from agricultural oilseeds like Groundnut, Linseed/Flax, Mustard, Sesame, Soybean, etc and Forest/tree based oilseeds like Karanj, Mahua, Neem, etc. Leftover residue (from agricultural oilseeds) can also be used as supplement in cattle feed.

- **Masala & Herbs Grinder** (500gm capacity, 2000W): It was handed over to Tala village JFMC after training the locals in machine operation. The machine will be used to grind/prepare spices like cloves, black pepper, cinnamon, turmeric, chilli, coriander, cardamom, fenugreek, etc and many Ayurvedic powders.

- **500 Sanitary Pad Packets:** They were distributed in many villages. Sanitary pads distribution was complemented by sensitization/training sessions for villagers on Menstrual Hygiene.

Conclusion:

With this initiative, not just the Forest Plantations have been made plastic free, but also the local JFMCs got the best out of the waste. Apart from managing the dry plastic waste, the initiative has partially addressed the management of wet waste also. It is in sync with PM Modi's vision of Swachh Bharat and making India free from single-use plastic by 2022. According to *Time for Change*, carbon footprint of LDPE plastic is about **6kg CO_2 per kg of plastic.** Thus this initiative has effectively prevented around 30,000kg CO_2 emission.

रेखीय अवसंरचना एवं पर्यावास विखंडन

डॉ. अंकुर अवधिया

अवसंरचना या आधारिक संरचना (infrastructure) किसी समाज या उद्योग के सही तथा सुचारु रूप से काम करने के लिये आवश्यक मूलभूत भौतिक एवं संगठनात्मक संरचना होती है। उदाहरण के लिए रोड, रेल्वे लाईन, पाईप लाईन, बिजली की लाईन, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज आदि का नाम लिया जा सकता है। ये वे सेवाएँ और सुविधाएँ हैं जो अर्थव्यवस्था के काम करने के लिये आवश्यक हैं। इनमें से कई, जैसे रोड, रेल्वे लाईन, पाईपलाईन, और बिजली की लाईन को मानचित्र पर लकीरों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है। ऐसी अवसंरचनाओं को रेखीय अवसंरचना (linear infrastructure) कहा जाता है।

प्रायः जब भी रेखीय अवसंरचना के निर्माण का मामला आता है, तब उसके पारिस्थितिकीय तंत्र पर होने वाले दुष्परिणामों को यह कहकर न्यायसंगत या उचित ठहराया जाता है कि इससे वनों के क्षेत्रफल में होने वाली कमी नगण्य है। जाहिर सी बात है कि अगर अवसंरचना रेखीय है तो उसका क्षेत्रफल बहुत कम रहेगा, क्योंकि उसमें लंबाई तो है, पर चौड़ाई नहीं है। पर ऐसी सोच से वनों तथा वन्यजीवों के रहवास और पर्यावास पर बेहद गंभीर दुष्परिणाम हो सकते हैं। आज हम उनमें से दो की चर्चा करेंगेः पर्यावास विखंडन (habitat fragmentation) और पर्यावास हानि (habitat loss)।

पर्यावास विखण्डन का अर्थ होता है किसी जीव के पर्यावास क्षेत्र को छोटे-छोटे खण्डों में बाँट देना। वन्य जीव प्रबंधन की दृष्टि से बड़े तथा एकजुट रहवास क्षेत्रों का विशेष महत्व होता है, क्योंकि ये न सिर्फ वन्य जीवों की बड़ी जनसंख्या को अवलंब देते हैं, बल्कि साथ ही प्रतिकूल परिस्थितियों में एक तरीके से प्रजातियों के विलुप्तिकरण के खिलाफ रक्षा कवच का कार्य भी करते हैं। उदाहरण के लिए अगर एक बाघ को जीवित रखने के लिए 80 वर्ग किलोमीटर वन की आवश्यकता हो (जो कि पर्याप्त मात्रा में भोजन, रहवास, आदि उपलब्ध करा सके), और किसी कारण से इस क्षेत्र को 40 वर्ग किलोमीटर के दो विसंबंधित क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाए (मसलन 80 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र के मध्य से एक सड़क गुजार दी जाए जिसे बाघ लाँघ न सकें), तो दोनों में से किसी भी क्षेत्र में बाघ की जनसंख्या नहीं रह सकेगी। यह तब भी होगा, जब इस सड़क का क्षेत्रफल 80 वर्ग किलोमीटर की तुलना में नगण्य हो।

इस प्रकार के विखंडन का प्रतिकूल प्रभाव विशेष तौर से उन प्रजातियों पर पड़ता है जिन्हें जीवन जीने के लिए अधिक क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है। ये प्रजातियाँ प्रायः बड़े जानवरों की होती हैं, जैसे बाघ, भालू, भेड़िया, और हाथी। इन्हें अंब्रेला प्रजातियाँ (umbrella species) भी कहा जाता है। कई अंब्रेला प्रजातियाँ परभक्षी (predator) प्रजातियाँ होती हैं जो अपने छोटे-छोटे शिकार प्रजातियों की जनसंख्या को काबू में रखती हैं। अगर पर्यावास को बहुत ही छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया जाए, तो उसमें चूहा, खरगोश जैसे छोटे-छोटे जानवर ही रह सकेंगे। प्रायः इनमें से कई कृतंक (rodent) प्रजातियाँ मनुष्यों के लिए बीमारी फैलाने वाली और नुकसान पहुँचाने वाली प्रजातियाँ होती हैं। इस प्रकार पर्यावास विखंडन से मानव जाति का भी नुकसान होता ही है।

जीवों की आबादी के विखंडन से उनकी जनसंख्या पर भी प्रतिकूल प्रभाव पहुँचते हैं। अगर आबादी कम हो, और पर्यावास विखंडन के कारण वे आपस में प्रजनन करने में भी अक्षम हों, तो विलुप्ति भँवर (extinction vortex) की स्थिति निर्मित हो जाती है। वह इसलिए कि जब वन्यजीवों की संख्या कम हो, तो उनमें अंतः प्रजनन (inbreeding) की संभावना बढ़ती है और आनुवांशिकीय बीमारियों का खतरा भी प्रबल हो जाता है। इसके साथ ही कई बार वन्य

जीवों को प्रजनन के लिए उपयुक्त साथी ही नहीं मिल पाते। ऐली इफैक्ट (Allee effect) के कारण कई प्रजातियाँ, जैसे भेड़िया, ढ़ोल, आदि, जो मिलकर शिकार करते हैं, पैक साईज के कम होने पर शिकार करने में अक्षम हो जाते हैं। स्टोकैस्टिक इफैक्ट के कारण भी प्रजातियों का स्थानिक विलुप्तिकरण (local extinction) हो जाता है। आधुनिक काल में मानवीय हस्तक्षेप (anthropogenic interventions) से हुए पर्यावास विखंडन के कारण कई प्रजातियाँ लुप्तप्राय होती जा रही हैं।

रेखीय अवसंरचना जैसे रोड के कारण पर्यावास हानि भी हो रही है। उदाहरण के लिए अगर किसी वनक्षेत्र (Fig a) से एक सड़क गुजारने का प्रकरण सामने हो, तो प्रायः कोई भी इसका विरोध नहीं करेगा, खासतौर पर जब इस सड़क का क्षेत्रफल वनक्षेत्र के मुकाबले बहुत कम हो। पर इससे डिसेक्शन की प्रक्रिया की शुरुआत हो जाएगी (Fig b)। इसके बाद अगर इस सड़क पर कोई चाय की टपरी बना ले, तो लोग उसका भी स्वागत करेंगे, क्योंकि इससे लंबी यात्रा के दौरान जलपान तथा उपाहार की सुविधा प्राप्त हो जाएगी (Fig c)। प्रायः चाय वाला कुछ मवेशी भी साथ रख लेगा, ताकि लोगों को ताजा दूध मिल सके। और इस प्रकार जंगल में मवेशियों का आना-जाना शुरू हो जाएगा (Fig d)। पहले जब यह सड़क नहीं बनी थी, जब यह वनक्षेत्र वन्य जीवों के लिए सन्निहित पर्यावास (contiguous habitat) था। पर अब मवेशियों के कारण पर्यावास विस्थापन (habitat displacement) की स्थिति निर्मित होगी। मवेशियों के साथ तपेदिक, फुट एण्ड माऊथ डिजीज जैसी बीमारियाँ भी वनक्षेत्रों में प्रवेश पा जाएँगी और मानव-वन्यप्राणी द्वंद्व की स्थिति का भी निर्माण हो जाएगा।

जब लोग यह देखेंगे कि वनक्षेत्र में इस जगह गाड़ियाँ रुकती हैं तो यह जगह अपने आप एक बाजार का शक्ल लेने लगेगी। अब चाय के साथ समोसे, पकौड़े और घरेलू सामान भी बिकने लगेंगे। शायद कुछ सब्जियाँ भी पास में ही उगने लगें ताकि लोगों को पराँठे के साथ ताजा सब्जी मिल सके। इस प्रकार मानव गतिविधियों के बढ़ने से पर्यावास विखंडन की प्रक्रिया को बल मिलने लगता है (Fig e, f)। और धीरे-धीरे यह प्रक्रिया इतनी बढ़ जाती है कि पर्यावास बहुत ही छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाता है, जो प्रायः वन्यजीवों के किसी काम का नहीं रह जाता (Fig g, h)।

इस प्रक्रिया का एक उदाहरण ब्राजील के रोंडोनिया प्रदेश से मिलता है, जहाँ एक सड़क के निर्माण ने पूरे जंगल को तबाह कर दिया (Fig i-l)।

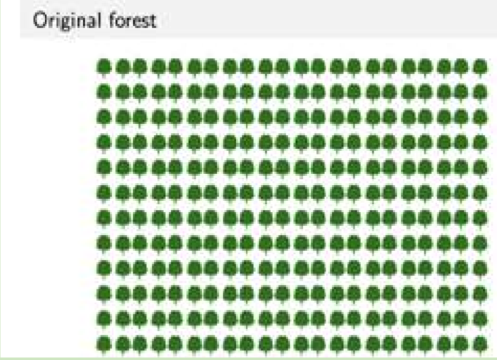

a

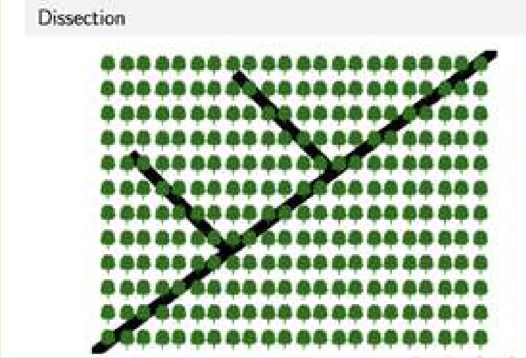

b

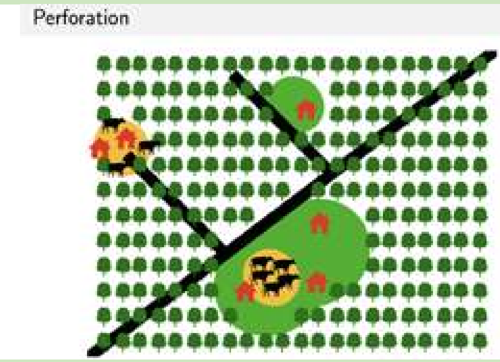

c

d

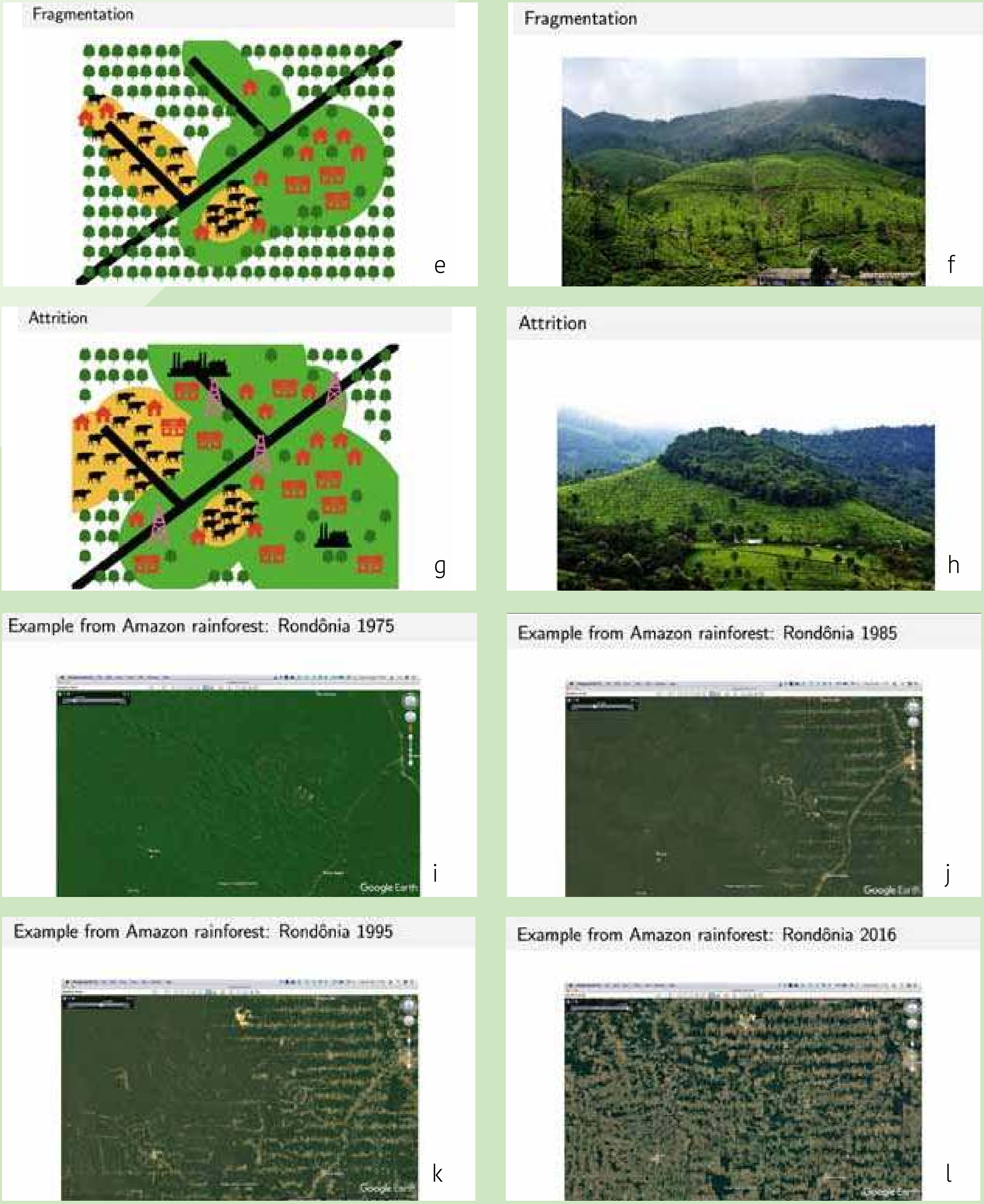

पर्यावास विखंडन की प्रक्रिया और ब्राज़ील के रोंडोनिया प्रदेश का उदाहरण

पर्यावास विखंडन की प्रक्रिया और ब्राजील के रोंडोनिया प्रदेश का उदाहरण

यह सच है कि विकास के कार्यों को वन्यजीव संरक्षण के लिए नहीं रोका जा सकता। पर यह भी सच है कि वन्यजीव हमें कई ऐसी सुविधाएँ मुफ्त में उपलब्ध करा देते हैं जिनका निर्माण करना बहुत खर्चीला होता है। अगर हमारे वन बचे रहेंगे तो धरती में पानी अपने आप रिसेगा, जो आस-पास के क्षेत्रों को न सिर्फ स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराएगा, बल्कि खेती की उपजता भी बढ़ायेगा। इसी पानी को हम बाँध से रोक सकते हैं और पाईप से लोगों तक पहुँचा सकते हैं, पर इसकी लागत कहीं अधिक है। इसी प्रकार हम या तो वायु और जल के शुद्धिकरण संयंत्र ही लगा लें या साबुत पारिस्थितिकीय तंत्रों से अपनी हवा और पानी को मुफ्त में ही साफ करा लें। चुनाव हमारा है और इसके लिए हमें ही सजग रहना होगा। अगर रेखीय अवसंरचना का निर्माण आवश्यक हो तो कम से कम लघुकरण उपाय (mitigation measures), जैसे वन्यजीवों के क्रियाकलापों के लिए अंडरपास और कैनोपी ब्रिज से पर्यावास विखंडन को रोकने की क्षमता तो हमें रखनी ही होगी। विस्तृत जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक Principles of Wildlife Conservation का अवलोकन किया जा सकता है।

Self Sustaining Camping Eco-Tourism

Kuno National Park received a group of caravan campers during 24-28th of December 2021. The campers share a common whatsapp group and do meet-ups in various National Parks, Tiger reserves and popular Holiday destinations in the country. The group arrived in Kuno on 24th and camped in Sesaipura Rest House campus the first day.

What made these campers different from other tourists are their camping vehicles. These vehicles are custom made with all the accommodations (including washroom) fitted in their vehicles. Most of these vehicles were large size SUVs while few were larger Force Travelers.

Vehicles carry roof-over tents with a ladder to climb on. Roll-able solar panels were also spotted with a portable UPS to power their Laptops and charge their phones

The boot of the camping vehicle carries all the rations, toiletries, a portable butane stove and a hose for shower and ablutions

Campers' second day began by interacting with young children and women of Hathedi village. They had brought along with them stationery and sanitary pads with them to distribute among the villagers and raise awareness about personal hygiene and education. They had a Gynecologist as their fellow team mate who educated the villagers.

Distribution of stationery among children of Hathedi Village.

Group's interaction with people of Hathedi village

DFO Kuno explaining the eco-tourism potential of Kuno National Park to other officials

District Collector Mr. Shivam Verma interacting with villagers of Tiktoli Villageother officials

The group's tour ended on 28th and they departed to pursue other protected areas in Rajasthan

Pic showing one of the group members editing a video to be posted later on their Youtube Channel : First Indian

Covid created Environment Volunteers- Save a Seed - Save a Tree Campaign - QR Coding of Trees

"In the middle of every difficulty lies opportunity" Albert Einstein

During pandemic things changed drastically in an unexpected way. Being a biology teacher, I always teach my students about biodiversity, climate change and the importance of indigenous varieties but I believe in practical approach rather than just memorizing the things. After 2020 due to pandemic most of my students were in their villages. So, I utilized this opportunity to spread awareness about the seed conservation and importance of conserving the indigenous seed varieties. I started a campaign in the month of October 2020; "SAVE A SEED- SAVE A TREE". I used the Social and the Print media to spread awareness about it. Slowly it became a chain reaction of different campaigns to conserve our nature. A glimpse of my various projects:

1) NATIVE SEED CONSERVATION PROJECT

a. Save a Seed - Save a Tree Campaign (Custard Apple)

Basically, it was a seed collecting competition, open for anyone living in Satna district specially targeted for the students. I preferred Custard Apple seed for this competition as this is a seasonal fruit of this area and due to its religious importance, it is been used in Diwali festival as well. Custard Apple (Annona cherimola) is a good source of Sodium, Potassium, high in antioxidants, reduces risk of depression related to Vitamin B6, prevent high blood pressure, anti-cancerous, boosts immunity and good for digestive system also.

I announced cash rewards for the students collecting the maximum number of seeds. As my target was indigenous seeds. I announced special rewards for those students who belong to rural areas. The result of this hard work was overwhelming, I got **545 registrations** in a very short interval of time including the tribal belts and extremely located areas of our district.

Finally on 27 November we organized a function where we collected more than 10,500 **(ten thousand five hundred)** seeds of Custard Apple.We organized this competition to make people aware of the crises we are facing today, we are destroying the environment, the indigenous varieties, which are more adaptive to our area, we are neglecting the biodiversity of our area which needs to be conserved. As the biodiversity and indigenous variety of our area help avert food shortages caused by major global disruptions such as COVID-19 and the impact of climate change. On the other hand, due to waste management system, the people use to through the seeds of fruit and vegetables in polyethene in the concrete forest. Hence, we destroy the possibility of growing a seed, a tree and a forest. The District Forest officer helped us by training my students, they sow the seeds in the Sonaura nursery of forest department and in our school premises. We were able to develop about 1000 plants which were planted in the different parks of the city. We planted about 150 custard apple trees in our school. Which have been adopted by the students for its further growth. There is a feeling of satisfaction that now my students are more compassionate and sensitized towards nature.

b. Satna Save Seed Campaign (Mango)

In 2021 I thought that why not to involve most of the citizen of the city in collecting seeds. So, I had approached the Nagar Nigam Commissioner, Tanvi Hooda ma'am with the proposal of seed collection with the help of

Nagar Nigam garbage vehicles from throughout the city. I always used to observe that people use to throw the seeds of the fruits in the polythene bags and then throw it in the garbage, every seed has a potential of germination for few months only if the seed don't come in contact with the soil in these few months its potential is lost and then it becomes the part of the garbage. So, I requested ma'am to provide the garbage vehicles with the separate sac (cement boori which are available in the construction sites everywhere) for the collection of the seeds, as a trial we started with the mango seeds.

My target is to protect the indigenous varieties of the seeds. Hence, we announced the collection of the mango seeds after the ripening of the local varieties of Mango started. So, we started this project from 5th of June 2021 on the occasion of Environment Day, Commissioner ma'am herself started this project by providing the mango seeds to the garbage vehicle. I trained the environment volunteers of my school for this through different social media platform. My student then started this campaign by separately

providing the mango seeds to the garbage vehicle. We collected the seeds for about a month till the native local varieties of the mango seeds were available. It was not an easy task as continuously I have to be in contact with the workers and the contractor, we need to clean the seeds daily as people used to treat them as garbage sometimes, they are really wet and can be infected by the fungus. So, with the help of the Nagar Nigam workers we made different chambers for its collection, they help us to clean them, they used to sun dry them and this was their duty that after drying the seeds properly they use to pack them in the sac. In a month we were able to collect about 6000 mango seeds from the city. We donated the seeds to the forest department, the horticulture department and to the education department. Now these seeds are growing very well. I always request people not to throw the seeds in the polythene bags in spite they should carry the seeds with them and throw them anywhere near the drainage or wherever wet soil is available. It's also good to throw them in the bushes to ensure their proper growth this whole project was a zero-budget project as no economic issues were involved.

2) ASSIGNING EDITABLE QR CODES (QUICK RESPONSE CODE) TO THE TREES.

Technology is playing a very significant role, these days everything around us is going digital. People don't have the time to read books and process the information. Hence, I thought of providing more attractive and

easy method to gain information and knowledge about the trees present in our school. My ninth-class students with the technical support team of the school worked really hard to generate the QR codes. So now a single QR code is just costing Rs10. The QR code which we are making are also editable. So, the data present in it can be edited anytime from anywhere using the password. We provided all the trees in our school with the QR code to keep up with the digital trend we collected the database of all the trees in our school and assign QR codes to them making it easier for everybody to learn about a tree at the tip of their fingers. Till now we have prepared the QR code for 50 different species of trees. Google can directly be used to avail the information of the trees. I started this as an experiment but the response has been overwhelming, Finally Nagar Nigam of Satna has assigned a contract with us for the 71 Parks under them, we have already conducted the survey for assigning the QR Codes on the trees. In our survey we found that in total there are 2989 trees of 102 different varieties of tree but the results were shocking as the number of align varieties like Royal Palm (390) is the highest, then Sheesham (201), Neem (156), Peepal (44), Banyan (25). However, the indigenous varieties like Mahua (2), Bael (06), Gamhar (09), Gular (13), Arjun (13) are very less in number. The result is a reflection of our ignorance toward the native varieties of tree. In QR we are providing information like Scientific Name, local name, medicinal use of the tree, interesting facts and photographs of the tree, flower, fruit, seed etc. Forest department Satna is also showing interest in our project. QR codes have been used during the Anubhuti Program at Maihar and are also being installed at Sonaura Nursery of Forest Department. Soon they will be installed at the White Tiger Safari Mukundpur. As I am sensitizing my students towards the environment from last many years. My students have become the source of awareness and information in the city. “THINK GLOBALY ACT LOCALLY”

हर यहाँ उपमा मिलेगी

हम विफ़ल होने नहीं देंगे कभी भी वानिकी,
वृक्ष हैं वो मित्र जो पर्यावरण को शुद्धि दें,
हो गये वनक्षेत्र सीमित आइये हम वृद्धि दें,
जो अवैधानिक विदोहनरत उन्हें सद्बुद्धि दें,
वन हमें समृद्धि देंगे हम इन्हें समृद्धि दें,
आज कृतसंकल्प होकर लें शपथ अभियान की,
वृक्ष अपने पूर्वज हैं आइये पूजें चरण,
रोककर ये बादलों को कर रहे जल संग्रहण,
रोकते हैं वन प्रदूषण और माटी का क्षरण,
क्या कभी हो पायेंगे इनके ऋणों से हम उऋण,
वन धरोहर हैं हमारी संस्कृति सम्मान की,
वन धरा पर इस प्रकृति के अन्यतम उपहार हैं,
स्त्रोत औषधियों रसायन के विपुल भंडार हैं,
मौन योगी से खड़े ये वृक्ष प्राणाधार हैं,
जो न रोपें,काटने के क्या उन्हें अधिकार हैं,
राह में इनकी न हों हम श्रृंखला व्यवधान की,
वन्यजीवों, प्राणियों का मुक्त विचरण है यहाँ,
मुक्त हस्तों से हुआ सौंदर्य वितरण है यहाँ,
पर्यटन के भी लिए आदर्श कारण है यहाँ,
हर यहाँ उपमा मिलेगी हर विशेषण है यहाँ,
हम बना देंगे धरा झांकी हरित परिधान की,

रत्नदीप खरे
संपर्क : 9826043425

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (अक्टूबर- दिसम्बर 2021)

श्री संजय मोहर्रिर
(मुख्य वन संरक्षक, विशेष कर्तव्यस्त अधिकारी, वन विभाग म.प्र.)

श्री लालजी मिश्रा
(वन मण्डलाधिकारी, होशंगाबाद)

श्री मोहन लाल हरित
(वन मण्डलाधिकारी, झाबुआ)

अखबारों के आईने में

भास्कर खास • सैलानी विश्राम कर सकेंगे, रात में पारंपरिक व्यंजन

पचमढ़ी में नीमधान एडवेंचर टूर शुरू, जंगल सफारी, पेड़ों के झूलों का आनंद

सर्दी जल्द आने से समय से पहले ही हजारों किमी दूरी तय कर भोपाल पहुंचे विदेशी पक्षी

बर्ड लवर्स ने डॉ. सलीम अली बर्ड काउंट में देखीं माइग्रेटरी बर्ड्स की 70 स्पीशीज

वन विहार में सफारी के लिए नए लुक में इलेक्ट्रिक कार्ट

खंडवा • पंधाना • हरसूद • मूंदी • कुमठी

25 हेक्टे.में 183 प्रजाति के पौधे होंगे तैयार, लोगों को मिलेगा रोजगार

महाराष्ट्र की निजी कंपनी ने खरीदे 41 हजार फलदार पौधे

हमारी नर्सरी के बेहतरीन पौधे, 450 किमी दूर से आए खरीदने

58 साल की अनारकली छठवीं बार बनी मां

बाघिन नए शावकों को सिखाएंगी इंसानों से दूर रहने का तरीका, कोर एरिया में पर्यटकों को देखने मिलेगा बाघों का नया कुनबा

एक्सीलेंस स्कूल में बच्चों ने जनरेट किए क्यूआर कोड्स ताकि दुर्लभ हो रहे औषधीय पेड़ों की जान बचे और पहचान भी बढ़े...

वानिकी गतिविधियां कार्टूनिस्ट की नजर में

भैरव कुंड, इंदौर

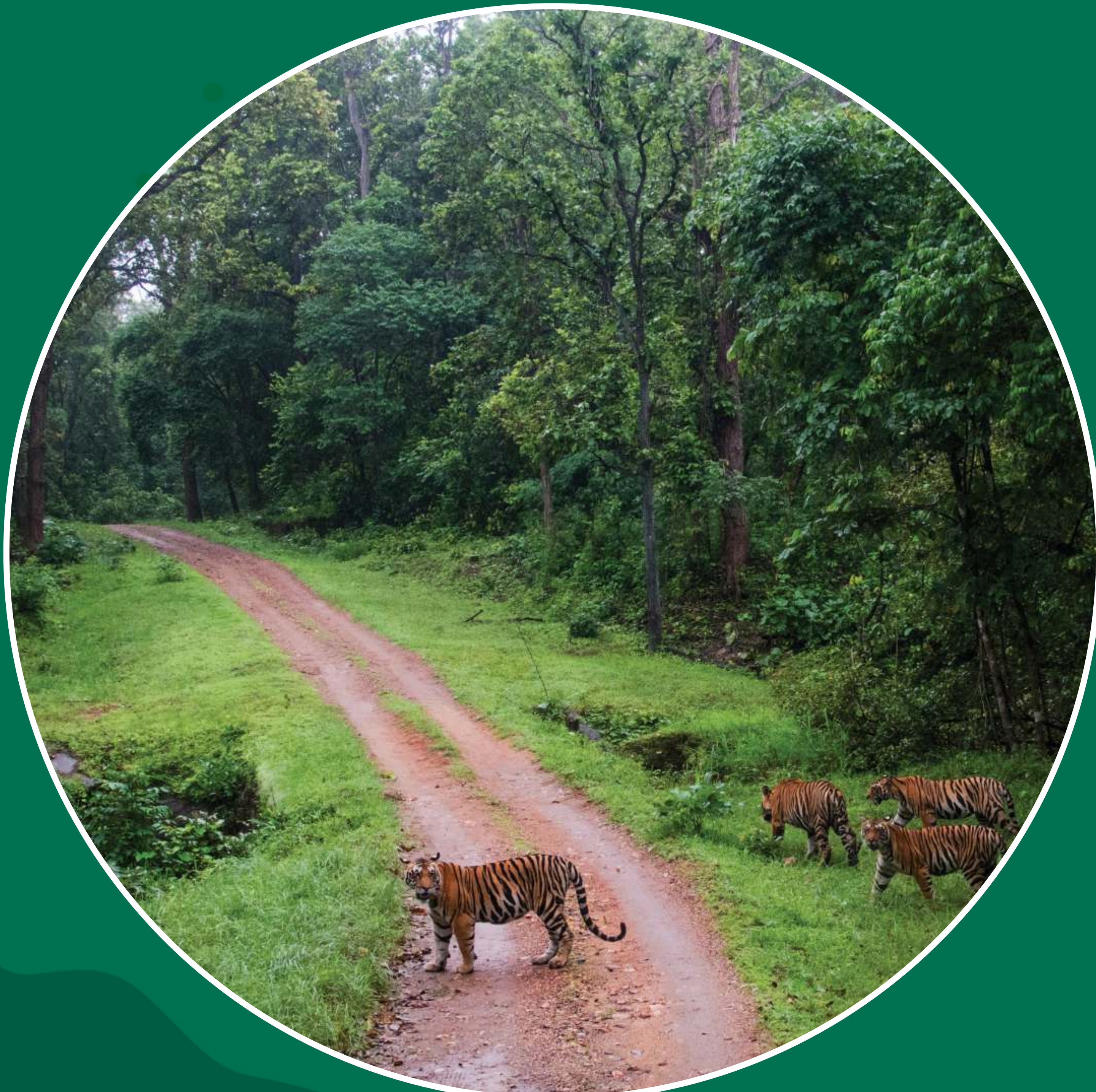

Published by:-APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by:-Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at :- Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M P Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhavan, Bhopal, M.P
Email:-dcfpracharprasar@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524239, Editor:-Sanjay shukla, APPCF (R/E)

मध्यप्रदेश माध्यम/2022